डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG,5

आधुनिक समाचार

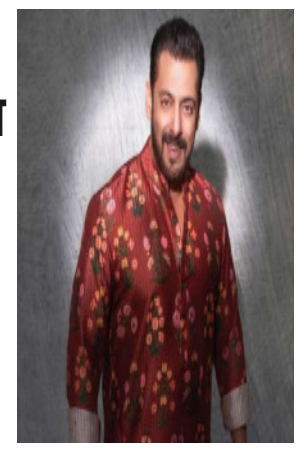

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG,8

सिनेमाः सलमान खान ने रखी इतनी बड़ी शर्त

वर्ष -07 अंक -329 | प्रयागराज, बुधवार 02 फरवरी, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

सरकार को भी बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट की शर्तो से हटने की अनुमति नहीं

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को जापान द्वारा वित्त पोषित मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना से जुड़े एक मामले में अहम फैसला सुनाया। शीर्ष अदालत ने कहा कि किसी भी कंपनी और यहां तक कि भारत सरकार को भी इस परियोजना से जुड़े लोन डीड समेत समझौते के किसी भी नियम और शर्तों से अलग होने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। इसके साथ ही शीर्ष अदालत ने मोंटेकाली लिमिटेड नामक कंपनी के पक्ष में दिए गए दिल्ली हाई कोर्ट के फैसले को भी रद कर दिया। बुलेट ट्रेन से संबंधित कई कायी के लिए मोंटेकाली के टेकनेकल बिड को जापान इंटरनेशनल कोआपरेशन एजेंसी (जेआइसीए) द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति द्वारा रद कर दिया गया था। शीर्ष अदालत ने कहा कि दूसरे देशों या एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं में न्यायिक हस्तक्षेप न तो देशहित में है और न ही व्यापक जनहित में। जस्टिस एमआर शाह और जस्टिस एएस बोपनन की पीठ इस सवाल पर विचार कर रही थी कि क्या इस मामले में और ऐसी विदेशी वित्त पोषित परियोजना के संबंध में बिना किसी विशिष्ट दुर्भावना या पक्षपात के आरोप में हाई कोर्ट का निविदा प्रक्रिया में हस्तक्षेप करना उचित था।

गुरुग्राम नमाज विवाद में याचिका पर सुप्रीम कोर्ट करेगा सुनवाई

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट गुरुग्राम में जुमे की नमाज पढ़ने में कथित व्यवधान को लेकर हरियाणा सरकार के शीर्ष अधिकारियों के खिलाफ अवमानना कार्रवाई के लिए दायर याचिका तत्काल सूचीबद्ध करने पर सोमवार को तैयार हो गया। यह याचिका राज्यसभा के पूर्व सदस्य मोहम्मद इस अदालत ने ही कई अदीब ने दायर की है। प्रधान न्यायाधीश एनवी रमना, जस्टिस एसएस बोपनन और हिमा कोहली की पीठ ने अदीब की याचिका पर वरिष्ठ अधिवक्ता इंदिरा जयसिंह के कथन पर विचार किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के अधिकारी 2018 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का पालन नहीं कर रहे हैं, जिसमें घृणा अपराधों को रोकने के लिए कई निर्देश जारी किए गए थे।

पी चिदंबरम बोले- विपक्षी दलों के पास अर्थव्यवस्था को लेकर कोई विचार नहीं

नई दिल्ली। वित्त वर्ष 2022-23 का बजट (लू 2022) पेश होने से पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने मंगलवार को विपक्षी दलों पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा है कि विपक्षी दलों के पास अर्थव्यवस्था को लेकर कोई विचार नहीं है। कांग्रेस नेता ने कहा, 'आर्थिक सर्वेक्षण के बाद अगर आप आज सुबह कुछ अखबार पढ़ेंगे तो आप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि भारत में विपक्ष नहीं है और यदी है तो कमजोर है और उसके पास अर्थव्यवस्था को लेकर कोई विचार नहीं है।' उन्होंने यह बात ट्वीट करके कही। संसद के दोनों सदनों में आर्थिक सर्वेक्षण पेश किए जाने के बाद कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने सरकार पर तंज कसते हुए कहा था कि 31 मार्च 2020 को हम जहां थे, वहां

वापस जाने में दो साल लग गए। उन्होंने सोमवार को ट्वीट करके कहा, 'आर्थिक सर्वेक्षण में यह बात कही गई है कि 2021-22 के अंत में अर्थव्यवस्था महामारी से पहले के स्तर (2019-20) पर होगी। सीधी भाषा में कहें तो इसका मतलब है कि 31.03.2022 को जीडीपी उसी स्तर पर होगी, जैसा कि 31-3-2020 को थी। इसका मतलब है कि 31-3-2020 को हम जहां थे, वहां वापस जाने में दो साल लग गए हैं।ा ा साल भी केंद्रीय बजट पारंपरिक 'बही-खाता' रूप में मंत्री निर्मला सीतारमण टैबलेट से बजट पेश करेंगी। वह लगातार चौथी बार बजट पेश करेंगी। संसद का बजट सत्र 31 जनवरी को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के अभिभाषण के साथ शुरू हुआ और आठ अप्रैल को समाप्त होगा। संसद के केंद्रीय बजट सत्र का पहला भाग 31 जनवरी से 11 फरवरी तक चलेगा। वहीं बजट सत्र का दूसरा भाग 14 मार्च से 8 अप्रैल तक चलेगा।

कोरोना के एक लाख 67 हजार नए मामले, 20 दिन बाद आए दो लाख से कम केस

नई दिल्ली, । कोरोना की तीसरी लहर कमजोर पड़ती दिख रही है। कोरोना के मामलों में पिछले कुछ दिनों से लगातार गिरावट देखी जा रही है। कोरोना के आज 1,67,059 नए मामले सामने आए हैं। हालांकि, कोरोना से मरने वालों की संख्या

में बढ़ोतरी टेंशन बढ़ा रही है। बीते 24 घंटे में कोरोना से 1192 लोगों की मौत हो गई। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि इस दौरान 2,54,076 मरीज कोरोना से ठीक भी हुए हैं। डेली पाजिटिविटी रेट भी अब 11.69 ३ हो गया है। देश में अब कोरोना के एक्टिव मामले घटकर 17,43,059 हो गए हैं। वहीं, इसके अब तक 4,14,69,499 मामले सामने आ चुके हैं। इसके अलावा 3,92,30,198 लोग अब तक ठीक हो चुके हैं। 4,96,242 लोगों की कोरोना से मौत हो चुकी है। बता दें कि देश में लगभग 20 दिन बाद कोरोना के दो लाख से कम मामले सामने आए हैं। इससे पहले 10 जनवरी को करीब 1 लाख 94 हजार मामले सामने आए थे। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीआमआर) ने कहा है कि भारत में कल कोरोना वायरस के लिए 14,28,672 सैंपल टेस्ट किए गए। वहीं, अब तक कल तक कुल 73,06,97,193 सैंपल टेस्ट किए जा चुके हैं।

कर्नाटक के होयसला मंदिर विश्व विरासत की सूची में भारत के नामांकन के तौर पर शामिल

नई दिल्ली,। कर्नाटक के बेलूर, हलेबिड और सोमनाथपुरा के होयसला मंदिरों को वर्ष 2022-2023 की विश्व विरासत सूची के लिए भारत के नामांकन के तौर

पर शामिल किया गया है। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने सोमवार को इस बारे में जानकारी दी। होयसला के पवित्र स्मारक 15 अप्रैल, 2014 से यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल हैं और मानव रचनात्मक प्रतिभा के उच्चतम बिंदुओं में से एक का प्रतिनिधित्व करते हैं और देश की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत की गवाही देते हैं। यूनेस्को में भारत के स्थायी प्रतिनिधि ने सोमवार को औपचारिक रूप से होयसला मंदिरों का नामांकन विश्व विरासत के निदेशक, लजारे एलोंडौ को सौंप दिया। पहला कदम वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर को डोजियर जमा करना है जिसके बाद तकनीकी जांच की जाएगी। एक बार सबमिशन हो जाने के बाद यूनेस्को मार्च की शुरुआत तक वापस संचार करेगा। उसके बाद साइट मूल्यांकन सितंबर/अक्टूबर 2022 में होगा और जुलाई/अगस्त 2023 में डोजियर पर विचार किया जाएगा।

बिना वेतन कार्य कर रहे उप्र टाइगर रिजर्व कर्मचारी, सुप्रीम कोर्ट में लगाई गुहार

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश (ळ्ूईंप) के चार टाइगर रिजर्व (बाघ संरक्षित क्षेत्र) के दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को 11 महीने का बकाया वेतन दिलाए जाने की मांग वाली जनहित याचिका अधिवक्ता गौरव बंसल द्वारा दायर याचिका में कहा गया है कि इन दैनिक वेतनभोगी कर्मचारिया सुप्रीम कोर्ट (एल्जिस म्द्लू) में दायर हुई है। याचिका में अपील की गई है कि केंद्र, उत्तर प्रदेश और नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अधिवक्ता गौरव बंसल द्वाराअथारिटी को दैनिक वेतनभोगियों के कल्याण के लिए रिपोर्ट बनाने को समिति गठित करने का निर्देश भी दिया जाए क्योंकि वन क्षेत्र में कार्य करने वाले इन कर्मचारियों को प्रतिदिन कार्य के दौरान तमाम तरह की मुश्किलें आती हैं। जिन टाइगर रिजर्व के कर्मचारियों के वेतन भुगतान के लिए याचिका दायर की गई है, वे पीलीभीत टाइगर रिजर्व, दुधवा टाइगर रिजर्व, अमानगढ़ टाइगर रिजर्व और कतरनिया घाट टाइगर रिजर्व हैं।

नेट जीरो के लक्ष्य पर तेजी से होगा अमल, वायु प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार ने छेड़ रखा है अभियान

नई दिल्ली। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां दिनों-दिन जिस तरह से सामने आ रही है, उसे देखते हुए सरकार ने भी अब इससे निपटने की मुहिम को और तेज करने के संकेत दिए है। आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 में जलवायु परिवर्तन को पहली बार एक नए अध्याय के रूप में शामिल करके सरकार ने इसकी गंभीरता को भी सामने लाया है। वैसे भी कॉप- 26 में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार ने जो लक्ष्य तय किए गए है, जिसमें वर्ष 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य भी शामिल है, उसे हासिल करने के लिए आने वाले दिनों में कुछ और भी अहम कदम उठाए जा सकते है। आर्थिक सर्वेक्षण में सरकार ने इसके साथ ही वायु प्रदूषण और प्लास्टिक कचरे से जूझ रहे देश के सभी प्रमुख शहरों को भी इससे निजात दिलाने की मुहिम को भी आगे जारी रखने के संकेत दिए है। रिपोर्ट में सरकार ने यह बताया है कि पिछले सालों में वायु प्रदूषण के लिए निपटने के लिए सभी प्रमुख शहरों में जिस तरह से काम किया गया है, उसके परिणाम आने वाले दिनों में दिखेंगे। खासकर वाहनों और उद्योगों से होने वाले प्रदूषण के स्तर में सुधार देखने को मिलेगा। वहीं प्लास्टिक कचरे की रिसाइक्लिंग पर भी जोर दिया गया

है। जलवायु परिवर्तन की इस चुनौतियों के बीच सरकार सरकार के लिए कुछ सुखद संकेत भी सामने आए है, जिसमें देश के वन क्षेत्र में वर्ष 2011 के मुकाबले 2021 में तीन प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी हुई है। वैसे भी जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए ज्यादा से ज्यादा हरियाली बढ़ाने पर जोर है। फिलहाल जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए जो कदम उठाए गए है, उनमें लोगों की जीवन शैली को पर्यावरण अनुकूल देना आदि शामिल है। खास बात यह है कि सरकार ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए करीब आठ मिशन भी शुरुआत की है। इनमें राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन, हरित मिशन आदि शामिल है।

उत्तर भारत के अधिकांश हिस्सों में बारिश के आसार, फरवरी माह भी रहेगा ठंडा - IMD

नई दिल्ली। साल 2022 का दूसरा महीना फरवरी भी ठंडा रहेगा। मौसम विभाग ने सोमवार को जारी अपने पूर्वानुमान में बताया है कि फरवरी में देश के ज्यादातर हिस्सों में सामान्य से कम तापमान रहने की संभावना है, जबकि पंजाब और हरियाणा में सामान्य से ज्यादा बारिश हो सकती है। मौसम विभाग द्वारा मासिक अनुमान में बताया गया है कि पंजाब और हरियाणा को छोड़कर उत्तर भारत के अधिकांश हिस्सों में सामान्य या सामान्य से कम बारिश हो सकती है।मौसम विभाग ने कहा, फरवरी 2022 में पूर्वोत्तर भारत के पूर्वी हिस्से, दक्षिण भारत के प्रायद्वीपीय इलाके और मध्य भारत के दक्षिण-पूर्वी हिस्से को छोड़कर देश के ज्यादातर क्षेत्रों में न्यूनतम तापमान सामान्य से नीचे बना रहेगा। इन इलाकों में सामान्य या सामान्य से अधिक तापमान रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने कहा कि ध्रुवीय प्रशांत क्षेत्र में इस समय कमजोर ला नीना परिस्थितियां सक्रिय हैं ला नीना मौसम संबंधित घटना है, जिसे भीषण ठंड से जोड़ा जाता है। विभाग ने बताया कि नवीनतम मानसून मिशन क्लाइमेट फोरकास्ट सिस्टम के पूर्वानुमान से संकेत मिलता है कि ला नीना की परिस्थितियां उत्तरी गोलार्ध में वसंत के मौसम से कमजोर पड़ना शुरू होंगी। यह 2022 की दूसरी तिमाही के दौरान तटस्थ स्थिति में पहुंचेंगी। प्रदूषण नियंत्रण के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों से देशभर

के 96 शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार हुआ है। आर्थिक सर्वे में कहा गया है कि सरकार ने इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने को बढ़ावा देने और वायु प्रदूषण को कम करने के अपने प्रयासों के तहत एक अप्रैल, 2019 को फेम योजना के दूसरे चरण को मंजूरी दी थी। पांच वर्ष की अवधि वाली इस योजना के तहत 10 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाने हैं। लगभग 86 प्रतिशत फंड इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए खर्च होना है। आर्थिक सर्वे में कहा गया है कि योजना के तहत 7,090 ई-बसों, 5 लाख ई-थ्री व्हीलर वाहनों, 55,000 ई-कार और 10 लाख ई-दोपहिया वाहनों के उत्पादन को समर्थन देकर इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए मांग पैदा करना है। सर्वे में बताया गया है कि इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए परमिट की आवश्यकता को हटा दिया गया है। सरकार द्वारा उठाए गए इन कदमों से 96 शहरों में 2019-20 की तुलना में 2020-21 में पीएम (पार्टिकुलेट मैटर) 10 में कमी आई है।

इन केंद्रीर्य कर्मचारियों के लिए 15 फरवरी तक रहेगा वर्क फ्रॉम होम, कार्मिक मंत्रालय का आदेश जारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने सोमवार को अपने 50 फीसद कर्मचारियों के लिए वर्क फ्राम होम (ॅवतव् ढ्तवउ भ्वउम, घर से काम) व्यवस्था की अवधि 15 फरवरी तक बढ़ाने का निर्देश जारी किया है। इसके तहत अवर सचिव स्तर (ळ्टी शमीॅ) की ओर से जारी किया गया है। जारी किए गए आदेश में कहा गया कि केंद्र सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों को अलग-अलग समय-सारणी के हिसाब से कार्यालय आना होगा ताकि दफ्तरों में अधिक संख्या में

एर्मीूब) से नीचे के 50 फीसद कर्मचारियों को घर से काम करने की छूट है। वहीं दिव्यांग कर्मी और गर्भवती महिला कमिऱ्यों को दफ्तर आने से छूट प्रदान की गई है। यह आदेश कार्मिक मंत्रालय (क्षैदहहात् लोग नहीं एकत्रित हों। केंद्र सरकार के अधिकारियों व स्टाफ के लिए 9 ।ड से 5.30 च्ड और 10 ।ड से 6.30 च्ड का समय निर्धारित किया गया है।इससे पहले कोरोना वायरस संक्रमण के बढ़ते मामलों के बीच केंद्र सरकार ने 3 जनवरी को आदेश जारी कर अवर सचिव स्तर से नीचे के अपने 50 फीसद कर्मचारियों को 31 जनवरी तक घर से काम करने की अनुमति दी थी। केंद्र सरकार के सभी विभागों को जारी आदेश में मंत्रालय ने कहा कि कोविड निषिद्ध (कन्टेनमेंट) क्षेत्रों में रहने वाले सभी अधिकारियों/कमिऱ्यों को भी तब तक कार्यालय आने से छूट दी गई है, जब तक वे क्षेत्र निषिद्ध बने रहते हैं। आदेश के मुताबिक, 'अवर सचिव स्तर से नीचे के सरकारी कमिऱ्यों की प्रत्यक्ष उपस्थिति वास्तविक कर्मचारी संख्या की 50 प्रतिशत तक सीमित होगी और बाकी 50 प्रतिशत लोग घरों से काम करेंगे।' आज जारी किए गए आदेश में कहा गया है कि अवर सचिव के स्तर से नीचे के सरकारी कर्मचारियों की शारीरिक उपस्थिति वास्तविक संख्या के 50 फीसद तक सीमित होगी और शेष 50 फीसद घर से काम करेंगे। संबंधित सभी विभागों द्वारा एक रोस्टर तैयार करने का निर्देश भी दिया गया है।

आयोग कानूनों की वैधानिकता को चुनौती के मामले में हलफनामा दाखिल न करने पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र पर लगाया जुर्माना

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग कानून और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान आयोग कानूनों की वैधानिकता को चुनौती के मामले

में केंद्र सरकार के जवाब दाखिल न करने पर सोमवार को गहरी नाराजगी जताई। कोर्ट ने केंद्र सरकार पर 7,500 रुपये जुर्माना लगाया और चार सप्ताह में जवाब दाखिल करने के लिए अंतिम मौका दिया है। भाजपा नेता और वकील अश्वनी कुमार उपाध्याय ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग कानून, 1992 और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान आयोग कानून, 2004 की वैधानिकता को चुनौती दी है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 28 अगस्त, 2020 को केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था, लेकिन केंद्र सरकार ने कई बार समय मांगने के बावजूद अभी तक मामले में जवाब दाखिल नहीं किया है। सोमवार को यह मामला जस्टिस संजय किशन कौल और जस्टिस एमएम सुंद्रेश की पीठ के समक्ष सुनवाई पर लगा था। केंद्र सरकार ने कोर्ट में आग्रह पत्र देकर जवाब दाखिल करने के लिए कुछ और समय दिए जाने की मांग की थी लेकिन याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील विकास सिंह ने केंद्र के आग्रह का विरोध किया। पीठ ने केंद्र सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सालिसिटर जनरल (एएसजी) केएम नटराज से जब जवाब दाखिल करने के बारे मे पूछा तो उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने मामले में पत्र देकर समय मांगा है। कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए कहा कि आप हर बार समय मांगते हैं।

इलाहाबाद विकास मंच ने महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि मनाया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

प्रयागराज। दिनांक 30 जनवरी 2022 को इलाहाबाद विकास मंच की बैठक संतोष पैलेस होटल पर हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री बद्री चौरसिया जी ने किया, बैठक में सर्वप्रथम सभी सदस्यो द्वारा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि पर 2 मिनट का मौन रख कर नमन किया गया उसके उपरांत आगामी चुनाव के संदर्भ में चर्चा हुई जिसमे कई पाटिर्यों विशेष कर मंच के साथ पीस पार्टी, लोकतांत्रिक जनशक्ति पार्टी, हिंदुस्तान सोशलिस्ट पार्टी राष्ट्रीय विकास पार्टी सहित कई अन्य दलों के साथ लोकतांत्रिक जनमोर्चा का गठन किये जाने का प्रस्ताव हुआ । जिसमे विधानसभा फूलपुर के प्रत्यासी को समर्थन देने का प्रस्ताव भी आया साथ ही मंच आगामी नगर निकाय चुनाव में सभी सीटों पर अपने गठबंधन प्रत्याशियों को उतारा जायेगा गंठबंधन से ही सर्वसम्मति से मेयर का प्रत्याशी चुनकर चुनाव लड़ने की बात श्री बद्री चौरसिया जी ने की। सभा को मुख्य रूप से सम्बोधित करने वालो में प्रदेश सचिव अनिल जी लो0 जनमोर्च, सुश्री पूनम यादव,निशा मिश्रा,जावेद अहमद मनोज निषाद घर्मेन्द्र श्रीवास्तव रमेश केशरवानी ओ0पी0 राजपाल , राजेश सिंह डॉ अबरार, इत्यादि ने मुख्य रूप से सम्बोधित किया।

मौनी अमावस्या आज, स्नान उमड़ा रेला संगम में श्रद्धालुओं नें लगाई डुबकी

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। माघ मास की अमावस्या 31 जनवरी को पड़ रही है लेकिन उदय व्यापिनी होने के कारण मौनी अमावस्या एक फरवरी को मनाई जाएगी। मौनी अमावस्या पर भौमवती अमावस्या का दुर्लभ संयोग निर्मित हो रहा है। गंगा के तट पर सननव दान के लिए श्रद्धालुओं का रेला उमड़ेगा। उधर एक तरफ कोरोना की तीसरी लहर और दूसरी तरह संगम तट पर मौनी अमावस्या का सनन पर्व। एक फरवरी को मौनी अमावस्या के दिन एक करोड़ श्रद्धालुओं के सनन करने का दावा प्रशासन की ओर से किया जा रहा है। इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के जुटने से कोविड प्रोटोकाल का पालन कराना स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है। श्रद्धालुओं का आगमन शुरू हो चुका है। मुख्य सचिव दुर्गा प्रसाद मिश्र ने भी रविवार को माघ मेला क्षेत्र का निरीक्षण कर अधिकारियों को सकुशल मेला संपनन कराने का निर्देश दिया है।

जनसेवा मेरा लक्ष्य,कलमकारों के हित का संकल्प:आरती कोल

(आधुनिक समाचार सेवा)
अफत सिंह

प्रयागराज। कोरांव।विधानसभा क्षेत्र की भाजपा प्रत्याशी आरती कोल ने आधुनिक समाचार के संपादक एवं द जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव डॉ0पुनीत अरोरा से समाचार के राष्ट्रीय कार्यालय नैनी में एक भेंट व संवाद कार्यक्रम में चुनाव लड़ने के अपने लक्ष्य व संकल्प को प्रकट करते हुए कहा कि कोरांव क्षेत्र के दबे कुचले, पीड़ितों,कमजोरों और जन सामान्य का हित करना ही उनका मुख्य लक्ष्य है। भाजपा को देश के लिए आवश्यक बताते हुए उन्होंने इसके पुनः सत्तासीन होने की आशा जताई और कहा कि भाजपा ही एक ऐसी पार्टी है जो सबका साथ और सबका विकास चाहती है।उन्होंने द जनरलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव डॉ0अरोरा के संगठन की प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस तरह से यह संगठन पत्रकारों के हित में कार्य कर रहा है,अगर वह विधानसभा सदस्य चुनी जाती है तो निश्चय ही इस संगठन के साथ अपनी आवाज बुलंद करने में हमेशा साथ देती रहेंगी।उन्होंने राजनीति के विभिनन्-पहलुओं पर अपनी बात रखी और अपने जन सेवा के संकल्प को दोहराया। इस अवसर पर कुछ लोगों से संवाद करते हुए उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के जनहित के कार्य एवं भ्रष्टाचारियों माफियाओं आदि के प्रति योगी सरकार की प्रतिबद्धता को आज प्रदेश की सबसे बड़ी जरूरत बताया।

मौनी अमावस्या पर आस्था का उमड़ा जन सैलाब, लाखों लोग संगम में कर चुके हैं स्नान

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराजः माघ मेला क्षेत्र में मौनी अमावस्या के सनन पर्व पर भारी संख्या में सननाथिर्यों ने

संगम में डुबकी लगाई और अपनी मनोकामना प्राप्ति के लिए मां गंगा से याचना की हाड़ कंपाती ठंड और कोहरे को मात देते हुए हुए श्रद्धालुओं ने ब्रह्म मुहूर्त से ही सनन प्रारम्भ कर दिया था। अभी तक के अनुमान के अनुसार लगभग 40 लाख लोगों ने सनन कर लिया है। मेला क्षेत्र 641 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है और यहाँ कोविड़ प्रोटोकॉल के अनुसार व्यापक इंतजाम किए गए है। भीड़ को देखते हुए इस पर्व के लिए एंट्री गेट 16 से बढ़ाकर 21 किए गए हैं। साथ ही घाट को फैलाकर 6 किमी लंबा कर दिया है। मेले में चप्पे-चप्पे पर पुलिस निगरानी कर रही है। वाहनों को बकायदा वाहन स्टैंडों पर खड़ा करने की व्यवस्था है और डायवर्जन की समुचित व्यवस्था की गई है ताकि किसी भी श्रद्धालु या स्थानार्थी को किसी भी प्रकार की समस्या ना हो

दरोगा के घर से चोरी कर ले गए बाइक

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। बाइक चोरी करने वालों का हौसला बुलंद है। दरोगा अशोक कुमार लक्ष्मी टॉकीज के

पास लॉज में रहते है। वर्तमान में उनकी ड्यूटी इलाहाबाद हाईकोर्ट में लगी हुई है। उन्होंने कर्नलगंज थाने में ए.फ्आईआर दर्ज कराई है कि 29 जनवरी को हाईकोर्ट ड्यूटी पर गए थे। रात में लौटने के बाद बाइक खड़ी की और कमरे में सोने चले गए। अगले दिन सुबह जब उठे तो पता चला कि बाइक गायब है। उन्होंने सीसीटीवी फुटेज पड़ताल की जिसमें एक युवक बाइक चोरी करके ले जाता हुआ नजर आया है। फुटेज के आधार पर दरोगा ने थाने में बाइक चोरी का मुकदमा दर्ज कराया है। कुछ दिन पहले ही आजाद पार्क के सामने से एक सिपाही की बाइक चोरी हो गई थी उसने भी कर्नलगंज थाने में ए.फ्आईआर दर्ज कराई थी।

अज्ञात बाइक से टक्कर, वृद्ध घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर से मुबारकपुर रोड पर भभई गांव के सामने कपसा जा रहा वृद्ध बद्री प्रसाद प्रजापति उम्र 68 वर्ष जो अज्ञात बाइक सवार ने टक्कर मार दी। जिससे बद्री प्रसाद के पांव में चोट आई। स्थानीय लोगों ने घायल का इलाज कराने के बाद उनके घर सूचना दी। परिजन आकर घर ले गए। इस बीच वाहन चालक बाइक सहित भाग निकला।

एक किलो गांजा के साथ युवक गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अमित कुमार राय

को मुखबिर द्वारा सूचना मिली। कि लोचन गंज नहर की पुलिया के पास एक युवक गांजा लेकर जा रहा है। तभी फूलपुर पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर युवक को दबोच लिया। जो कोतवाली के बौंडई कटौता निवासी कन्हैयालाल पुत्र राम सजीवन उम्र 26 वर्ष के रूप में पहचान हुई। तलाशी लेने पर 1 किलो 100 ग्राम गांजा बरामद हुआ। आवश्यक लिखा पढ़ी एनडीपीएस ऐक्ट के तहत करने के बाद जेल भेजा गया। गिरफ्तारी टीम में उपनिरीक्षक विनय कुमार मिश्रा कांस्टेबल अभिषेक यादव कांस्टेबल विपुल कुमार आदि लोग रहे।

रेलवे फाटक 27 सी पार करना बना मुसीबत

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। आरओबी बन जाने

के बाद दोपहिया वाहन वाले पुल के नीचे से रेलवे फाटक जो अब बंद किया जा चुका है। बगल से दोपहिया वाहन वालों का आना जाना है। परंतु ट्रैक के बीचो बीच गड्ढे तथा ऊंची नीची जमीन के कारण बाइक सवार नित्य गिरकर चोटहिल होते हैं। बता दें कि आगामी 3 फरवरी से उपरिगामी पुल का आवागमन मरम्मत हेतु बंद किया जा रहा है। तब दो पहिया वाले ज्यादातर रेलवे फाटक के बगल से गुजरेंगे। जो बार-बर चोटहिल होते रहेंगे। ऐसे में नगर पंचायत अथवा लोक निर्माण विभाग द्वारा रेलवे ट्रैक के गड्ढों में गिट्टी मिट्टी भरवाए अन्यथा किसी दिन ट्रैक पर बड़ी दुर्घटना से इनकार नहीं किया जा सकता।

गुमशुदा की तलाश

नाम -लक्ष्मी कनौजिया
गोरा रंग
पिता का नाम-राजीव कनौजिया
उम्र लगभग 10 वर्ष

आज दिनांक 31 जनवरी 2022 को सुबह लगभग 11बजे घर सेनिकली है काले रंग की जैकेट वह नीले रंग की जींस पहने हुए हैं जिसका अभी तक कुछ पता नहीं चल पाया है जिस किसी को भी सूचना प्राप्त होती है इस नंबर (द्द91 6386 296 223) पर सूट सूचित करने की कृपा करें

किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने क्षेत्राधिकारी सोरांव को सौंपा ज्ञापन

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

सिकंदरा,प्रयागराज। संयुक्त किसान मोर्चा व भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय आवाहन पर केंद्र व राज्य सरकार के द्वारा किये गये वादों में से एक भी वादा पूरा ना किये जाने पर देश भर में

किसानों के द्वारा 31 जनवरी को विश्वासघात दिवस के रूप में मनाया गया। जिलाधिकारी मुख्यालय व उपजिलाधिकारी मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन कर महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंप कर विश्वासघात दिवस मनाया गया। 31 जनवरी की सुबह क्षेत्राधिकारी सोरांव अपने पुलिस टीम के साथ किसान नेता बब्लू दूबे के घर बर्जी गाँव पहुँच कर हाउस अरेस्ट किया । ा क्षेत्राधिकारी सोरांव को किसान नेता बब्लू दूबे के नेतृत्व में ज्ञापन सौंपा गया। इस मौके पर डाक्टर राममूरत, राजकुमार, रामसजीवन पटेल, श्याम लाल पटेल, रमेश तिवारी, महेंद्र कुमार, सुनील कुमार, विनोद कुमार, राजनाथ, छेदी लाल, राम कैलाश, रामसेवक, रवि चौधरी, अजय कुमार, अवधेश कुमार, शुरेश कुमार दूबे, नीरज सोनकर, सरफराज अहमद उर्फ सेबू मुस्ताक, राजकुमारी, मुनने देवी, कुसुम देवी आदि दर्जनों की संख्या में भाकियू सदस्य उपस्थित रहे।

जुआ खेलते दो गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। आगामी विधानसभा चुनाव व आदर्श आचार संहिता के अनुपालन के संबंध में पुलिस द्वारा चलाए जा रहे अभियान में थाना अध्यक्ष फूलपुर अमित कुमार राय को मुखबिर द्वारा सूचना मिली। कि मैलहन गांव में जुआ हो रही है। उप निरीक्षक राजेश कुमार वर्मा, उपनिरीक्षक माजिद खान, कांस्टेबल विष्णु देव यादव ने जुआ खेलते दो अभियुक्त अतीक अहमद पुत्र मोहम्मद रफीक निवासी नलकूप कॉलोनी फूलपुर व श्याम जी सोनी पुत्र फूल चंद सोनी निवासी मैलहन को 52 अदद ताश के पत्ते तथा फड पर 4660 रुपए एवं जामा तलाशी में 20450 रुपये बरामद हुआ। जिसके अंतर्गत थाना स्थानीय पर जुआ अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्यवाही की गई।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनुमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः- 15 फरवरी 2022**

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710,
9807278552, 9415608790

युवती के साथ शादी का झांसा देकर शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाले युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज ,आरोपी गिरफतार

(आधुनिक समाचार सेवा)
देवभूषण कन्नौजिया

वाराणसी-लोहता थाना क्षेत्र एक गांव की एक 20 वर्षीय युवती ने एक युवक पर विवाह करने का झांसा देकर शारीरिक संबंध बनाने का आरोप लगाया हैं। लोहता थाना में तहरीर देकर युवती का आरोप है कि हरपालपुर गांव निवासी 25 वर्षीय सफीक अहमद पुत्र पप्पू हाजी ने लगभग 3 वषी से विवाह का झांसा देकर कई बार शारीरिक संबंध बनाया। वही पीड़िता के पिता ने कहा 3 वषी से आरोपी सफीक विवाह की बात कहकर युवती के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाता था,जब विवाह करने की बात कही तो टाल मटोल करता रहा,और कल रविवार विवाह करने से इनकार कर दिया।थानाध्यक्ष राजेश सिंह ने कहा कि पीड़िता की तहरीर के आधार पर 376,420,504,506 का मुकदमा दर्ज करते हुए आरोपी युवक सफीक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

19 वर्ष बाद जिला अस्पताल में मिलेगी लिफ्ट की सुविधा

बलिया : जिला अस्पताल में 19 वर्ष बाद लिफ्ट की सुविधा शुरू होगी। अब मरीजों, चिकित्सकों व कर्मचारियों को दो मंजिला या तीन मंजिला पर जाने में सहूलियत मिलेगी। पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर

के प्रयास से अस्पताल के दूसरे परिसर में वर्ष 2003 में 150 शैय्या के तीन मंजिला भवन शुरू हुआ था। महानगरों की तर्ज पर बने इस अस्पताल में एक छत के नीचे हड्डी, सर्जिकल, बच्चा वार्ड, आपरेशन थियेटर, पैथोलाजी सहित अन्य चिकित्सकीय सुविधाओं के लिए जगह है, लेकिन एक तल से दूसरे तल पर मरीजों व स्वास्थ्य कर्मियों के आने-जाने में दिक्कत होती थी। अस्पताल में लिफ्ट पहले से लगा था, लेकिन उसे उसे चालू नहीं किया जा रहा था। 2017 में इसे चालू करवाने का प्रयास तत्कालीन सीएमएस डा. शिव प्रसाद ने किया था, लेकिन तकनीकी खराबी के कारण मामला अधर में पड़ गया। अब फिर से कानपुर की एक कंपनी के टेकनेशियन चालू करने में लगे हैं क्रमित व लक्षण वाले बच्चों के इलाज के लिए तीसरे तल पर पीकू वार्ड (पीडियाड्रिक इंटेसिव केयर यूनिट) बनने के बाद लिफ्ट की जरूरत महसूस की जाने लगी। अस्पताल प्रशासन पर लिफ्ट चालू कराने का दबाव बनने लगा। संस्था के टेकनेशियन पिछले तीन दिनों से कार्य कर रहे हैं। टेकनेशियन राजेश कुमार ने बताया कि एक सप्ताह में इसे चालू कर दिया जाएगा। वर्षों से बंद पड़े लिफ्ट को चालू करने के लिए कानपुर के इंजीनियर लगे हैं। इसे मैनुअल तरीके से चालू करने के लिए कार्य हो रहा है। एक सप्ताह में लिफ्ट की सुविधा मिलने लगेगी।

वाराणसी में महाशिवरात्रि से पहले श्रद्धालुओं के लिए खुल जाएगा विश्वनाथ धाम का गंगा द्वार

वाराणसी : श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की सौगात के बाद अब गंगा द्वार से प्रवेश का इंतजार भी खत्म होने जा रहा है। महाशिवरात्रि पर इसे श्रद्धालुओं व सैलानियों के लिए खोल दिया जाएगा। इसके साथ ही जल मार्ग से आवागमन भी शुरू हो जाएगा। कारण यह कि जलासेन से लेकर ललिताघाट तक बनाई गई जेटी भी नाव-बजड़ों के ठहराव के लिए तैयार हो जाएगी। गंगा द्वार पूरी तरह आकार पा चुका है और इस पर घाट तक सीढ़ियां बनाई जा रही हैं तो जेटी की फर्श पर सिर्फ पत्थर व रेलिंग लगाई आकार दे दिया गया है। लोकार्पण के समय इसका ढांचा ही तैयार हो पाया था। गंगा का जल स्तर बढ़ा होने से सीढ़ी-जेटी में विलंब हुआ। अब सीढ़ी भी ऊपर से नीचे की ओर बनाई जाने लगी है। वहीं 55 मीटर लंबी जेटी भी लगभग तैयार है। मणिकर्णिका से ललिता घाट तक 20 से 10 मीटर तक गंगा में चौड़ाई पहले ही बढ़ा ली गई है। इस पर अभी पत्थर लगाया जाना है। कार्यदायी एजेंसी लोकनिर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता संजय गोरे के अनुसार विस्तारित कार्यों में चहारदीवारी, ब्लाक फोर, कैफे

जानी शेष है। इसे इसी महीने पूरा कर लेने का लक्ष्य रखा गया है ताकि एक मार्च को बाबा के विवाहोत्सव पर्व पर जब श्रद्धालु आएं तो गंगा मार्ग से होते सीधे बाबा दरबार पहुंच जाएं। तय समय से पहले बन कर तैयार काशी विश्वनाथ धाम के नव्य-भव्य परिसर का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 13 दिसंबर को किया था। इसके बाद गोदौलिया गेट, ढूंढिराज गणेश द्वार व सरस्वती फाटक से मंदिर चौक तक श्रद्धालुओं को प्रवेश भी दिया जाने लगा। इसके साथ ही गंगा गेट, सीढ़ी, रैंप भवन समेत विस्तारित कार्यों में गति आई। गंगा गेट को चुनार के नक्काशीदार गुलाबी पत्थरों से पूरी भव्यता से भवन आदि का स्ट्रक्चर तैयार हो गया है। इन्हें फाइनल टच दिया जाना है। सीढ़ी और जेटी भी फरवरी में पूरी तरह तैयार कर ली जाएगी। वहीं 45 मीटर लंबे और आठ मीटर चौड़े रैंप भवन के लिए डायाफ्राम वाल बन गई है। ढलाई के साथ ही इसमें भी तेजी आ जाएगी। हालांकि रैंप भवन व सीवेज पंपिंग स्टेशन पूरा करने में पूरा मार्च लग जाएगा। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर व विशिष्ट क्षेत्र विकास परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी सुनील कुमार वर्मा के अनुसार महाशिवरात्रि पर श्रद्धालु गंगा द्वार से काशी विश्वनाथ धाम में प्रवेश पाएंगे। इसके लिए पहले ही अन्य कार्य पूरे कर लिए जाएंगे।

ट्रक-पिकअप की टक्कर, तीन लोग जख्मी

नरही/रेवती (बलिया) : थाना क्षेत्र के राजेश्वर मोड़ के समीप सोमवार को देर शाम ट्रक और पिकअप की टक्कर हो गई। पिकअप के परखचे उड़ गए। दुर्घटना के बाद ट्रक चालक फरार हो गया जबकि पिकअप चालक को हल्की चोटें आईं। घायल गोविद उपाध्याय निवासी नरही और ललुन उपाध्याय को जिला अस्पताल ले जाया गया है। उधर रेवती में सोमवार की देर शाम खड़ी ट्रक में पीछे से बाइक टक्कर हो गई। रखहा नूरपुर निवासी संजय यादव को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

आठ उपकेंद्रों की आज दो घंटे गुल रहेगी बिजली

बलिया : विद्युत सब स्टेशन सिकंदरपुर 132/33 केवी बलिया पर अनुरक्षण कार्य प्रस्तावित है, इसके कारण मंगलवार को दोपहर 12 से दो बजे तक शट डाउन लिया जाएगा। सिकंदरपुर तहसील व कस्बा, बिल्थरारोड तहसील व कस्बा, सैदपुरा, रतसड़, गौरा मदनपुरा, हल्दीरामपुर पंप कैनाल उप केंद्र की बिजली आपूर्ति इस दौरान ठप रहेगी। दो घंटे तक असुविधा हो सकती है। उत्तर प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कारपोरेशन के अधिशासी अभियंता खालिद फजल ने बताया कि कार्य को समय पर पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।

फसलों के बचाव के लिए किसानों को दी सलाह

गाजीपुरः मौसम में हो रहे लगातार परिवर्तन से होने वाली रबी की फसलों के नुकसान को देखते हुए जिला कृषि विभाग ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। जिला कृषि अधिकारी मृत्युंजय कुमार सिंह ने बताया कि जिले में सरसो, चना, मटर व आलू की फसलों को उगाने का बढ़ा रकबा है। इस समय मौसम में बढ़ रहे ठंड के कारण इन फसलों में कई प्रकार के रोग व कीट लगते है। इससे बचाव के लिए फसलों का प्रबंधन करते हुए नियमित निगरानी करें सरसों में इस समय माहू एवं पत्ती सुरंग कीट का प्रकोप इस समय बढ़ जाता है। इस कीट से बचने के लिए एजाडिरैक्टीन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को पांच सौ से लेकर छह सौ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। रासायनिक नियंत्रण के लिए डाईमेथोएट 30 फीसद की एक लीटर मात्रा को छह सौ से 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर सकते है। अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा सफेद गेरुई एवं तलासिता रोग से बचाव के लिए मैंकोजेब 75 फीसद डब्लूपी अथवा जिनेब 78 फीसद डब्लूपी की दो किग्रा मात्रा के साथ मैटालैक्सिस आठ फीसद की 2.5 किग्रा की मात्रा को छह सौ से लेकर 750 लीटर पानी में घोलकर फसलों पर छिड़काव करें। यह ध्यान रखें की फसल अच्छी तरह से भींग जानी चाहिए। आलू की पछेती झुलसा रोग से बचाव के लिए मैंकोजेब 75 फीसद डब्लूपी अथवा जिनेब 78 फीसद डब्लूपी दो किग्रा के साथ कापर आक्सी क्लोराइड 50 फीसद डब्लूपी की मात्रा 2.5 किग्रा मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। फाल आर्मीवर्म फसल के किसी भी चरण में पौधे के सभी हिस्सों पर हमला करता है। इसमें क्षति बहुत तेजी से होती है यह अपरिवर्तनीय बन जाती है। फाल आर्मीवर्म उपज में 60 फीसद तक का नुकसान कर सकते हैं। फसल की प्रारंभिक अवस्था में, यह बढ़ते छोटे पौधों को नुकसान पहुंचाता है। इससे बचाव के लिए अंड परजीवी ट्राइकोग्रामा प्रेटिओसम अथवा टेलीनोमस रेमस के 50 हजार अंडे प्रति हेक्टेरयर की दर से प्रयोग करने से इनकी संख्या को बढ़ने से रोका जा सकता है। बुकनी रोग से बचने के लिए घुलनशील गंधक 80 फीसद दो किग्रा ट्राइडेमेफाम 25 फीसद डब्लूपी 250 ग्राम को 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने की सलाह दी है। बीटी एक किग्रा अथवा एनपीबी दो फीसद एएस 250-300 एलई प्रति हेक्टेयर की दर से लगभग 250-300 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर सकते है। एजाडिरैक्टीन 0.03 फीसद 2.5-3 लीटर की मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से इस रोग से बचाव किया जा सकता है।

सफाई नहीं मिलने पर सचिव ने दिए निर्देश

गाजीपुर : जिले में संचालित हो रहे संरक्षण आश्रय गृहों का निरीक्षण एवं शिविर का आयोजन सोमवार को गठित समिति के सदस्यों ने किया। इस दौरान पूर्णकालिक सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कामायनी दूबे ने वन स्टाप सेंटर में साफ-सफाई नहीं मिलने पर नाराजगी जताई। प्रेक्षण गृह (किशोर) राजकीय प्रेस आफ सेफ्टी एवं राजकीय संप्रेक्षण गृह (किशोर) के निरीक्षण में शौचालय में साफ-सफाई एवं हार्पिक, साबुन, हैंडवाश, मच्छरों के लिए छिड़काव आदि की व्यवस्था कराने का निर्देश दिया। सैदपुर में संचालित पंडित भोलानाथ मिश्र, बालगृह (बालक) बड़गांव, मखदूपुर में उन्होंने बच्चों के भोजन की गुणवत्ता तथा अंदर लगे सीसीटीवी कैमरों को चेक कराया। बालगृह में दवा की उपलब्धता, सैनिटाइजेशन एवं कोविड-19 की जांच के संबंध में जानकारी ली। प्रत्येक दशा में मास्क का प्रयोग एवं मास्क उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। ठंड को देखते हुए प्रत्येक कमरे में अंगीठी, हीटर व अलाव जलाने व साफ-सफाई रखने को कहा। उन्होंने कहा कि हर बच्चे को शिक्षा पाने का अधिकार है। यथा संभव हर बच्चे को उच्च शिक्षा दिलवाए, विद्यालयों में अनुशासन बच्चों के आत्म सम्मान को चोट पहुंचाने वाला न हो। शिक्षा बच्चों के ऐसे जीवन के लिए तैयार करे जो उसमें समझ, शांति एवं सहनशीलता विकसित करे। इस मौके पर अध्यक्ष विष्णु चन्द्र वैश्य अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश व विशेष न्यायाधीश, पाक्सो न्यायालय, कक्ष संख्या-1, विनायक सोमवंशी, नवसृजित न्यायालय अपर सिविल जज (जू.डि.) चतुर्थ आदि मौजूद रहे।

वाराणसी के रोहनिया में आभूषण की दुकान सहित तीन जगहों पर चोरों ने चटकाए ताले

वाराणसी,। रोहनिया थाना क्षेत्र दफ्फलपुर त्रिमुहानी के पास आभूषण और बर्तन की दुकान का ताला तोड़कर हौसला बुलंद चोरों ने लाखों के आभूषण और नगदी पार कर दिया। रोहनिया थाना क्षेत्र के गोविंदपुर के रहनेवाले रवि जैन की दफ्फलपुर तिराहे के पास आभूषण और बर्तन की दुकान है। रवि जैन ने बताया कि पड़ोस में मिठाई वाले की दुकान है जिन्होने मंगलवार की सुबह दुकान का ताला टूटा देखा तो फोन करके सूचना दी। सूचना के बाद मौके पर पहुंचकर दुकान मालिक रवि ने रोहनिया पुलिस को चोरी की सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच और पूछताछ के बाद वापस लौट गई। रवि जैन के अनुसार चोरों ने लगभग चार लाख के आभूषण और 70 हजार नगदी पर हाथ साफ किया है। आभूषण में डेढ़ किलो चांदी, 250 ग्राम गला हुआ चांदी, 25 ग्राम सोना 16 जोड़ी पायल है।

जौनपुर में सराफा कारोबारियों के प्रतिष्ठानों और घरों में चौबीस घंटों से आयकर विभाग की जांच जारी

जौनपुर,। सोमवार की सुबह सात बजे से शहर के दो प्रमुख सराफा कारोबारियों के प्रतिष्ठानों व घरों में चल रही छापेमारी मंगलवार को सुबह भी जारी रही। इससे अन्य व्यवसायियों में खलबली मची हुई है। भारी संख्या में पुलिस बल के साथ छापेमारी करने वाली टीम सहायक निदेशक आयकर (जांच) वाराणसी व गोरखपुर के नेतृत्व में आई है, हालांकि छापेमारी करने वाली टीम कोई भी ब्यौरा देने से इन्कार कर रही है। दोनों व्यवसाइयों के प्रतिष्ठानों व आवासों के बाहर बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स की तैनाती है। 24 घंटे से चल रही छापेमारी से जौनपुर नगर के ओलंदगंज, कोतवाली, रासमंडल सहित नगर क्षेत्र की अन्य सराफा कारोबारियों में भय व्याप्त है। सोमवार की सुबह करीब सात बजे पुलिस फोर्स के साथ लगभग 16 गाड़ियों से छापेमारी करने आई टीम नखास

में सद्भावना पुल पहुंच मार्ग पर नन्हें लाल वर्मा के कीर्तिकुंज शोरूम पर धमकी। जहां कारोबारी को बुलाकर गेट खोलवाया। इसके बाद टीम के सदस्य अंदर गए और बाहर पुलिस फोर्स तैनात हो गई। इसके बाद टीम के कुछ सदस्य सामने स्थित विवेक सेठ के प्रतिष्ठान गहना कोठी पहुंचे। जहां लगभग आधे घंटे बाद शटर खुला तो टीम के सदस्य अंदर प्रवेश किए और जांच शुरू की। इसके साथ ही टीम ने नन्हें लाल वर्मा के चहारसू चौराहा स्थित प्रतिष्ठान व आवास तथा कोतवाली चौराहा स्थित गहना कोठी शोरूम व ख्वाजादोस्त मोहल्ला स्थित प्रतिष्ठान मालिक विवेक सेठ के आवास पर छापेमारी कर रहे है। सहायक निदेशक आयकर (जांच) वाराणसी की टीम गहना कोठी के प्रतिष्ठान व मालिक के आवास तथा सहायक निदेशक आयकर गोरखपुर की टीम कीर्तिकुंज ज्वेलर्स के शोरूम व मालिक के आवास पर छापेमारी कर रही है। इस दौरान बाहर डंटे पुलिस कर्मी मीडियाकर्मियों को भी पास नहीं जाने दे रहे है।

बजट 2022 : वाराणसी - नई दिल्ली बुलेट ट्रेन की परिकल्पना को मिल सकती है आकार

वाराणसी,। रेल बजट में इस बार वाराणसी के हिस?से में हाई स?पीड रेल कारिडोर के आने की उम?मीद जगी है। दरअसल पूर्व में ही पहले चरण के लिए वाराणसी से नई दिल?ली तक के लिए सर्वे हो चुका है। सर्वे जारी होने के बाद अब दोबारा इसे जमीन मिलने की उम?मीद जगी है। माना जा रहा है कि इस बार आम बजट-2022 में रेलवे के लिए कई बड़ी घोषणाओं की संभावना है। इनमें वाराणसी - नई दिल्ली बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट, वंदे भारत एक्सप्रेस का विस्तार और नए डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर्स शामिल हो सकते हैं। नए रूट पर सेमी हाई स्पीड ट्रेन भी चलाने की घोषणा भी की जा सकती है। वहीं बजट में सरकार सभी ट्रेनों से पुराने आईसीएफ कोच को हटाकर नए एलएचबी कोच लगाने के एलान का भी लोगों को इंतजार है। देश के विभिन?हिस्सों में प्रस्तावित हाई स्पीड रेल कॉरिडोर विकसित करने की योजना इन दिनों जापान के सहयोग से प्रगति पर है। इनमें शामिल वाराणसी - नई दिल्ली रूट का डीपीआर लगभग फाइनल हो चुका है। जबकि दूसरे चरण में वाराणसी से कोलकाता तक के रूट के लिए उम?मीद परवान चढ़ी है बीते वर्ष 2019 के रेल बजट में

पिछले साल 2021 के आम बजट में ईस्ट कोस्ट, ईस्ट-वेस्ट और नॉर्थ-साउथ जैसे रूट के लिए नए डीएफसी कॉरिडोर बनाने की भी घोषणा की गई थी। वहीं वाराणसी में यात्रियों की संख्या के मद्देनजर नई ट्रेनों का ऐलान की मांग लंबे समय से रही है। यात्री किरायों में छूट की भी जहां यात्रियों की मांग रही है वहीं रेल सफर सुरक्षित सुनिश्चित करने की दिशा में सरकार कदम उठने की मांग की गई है। यदि रेल किराया बढ़ाने की सूरत में यात्रियों की मांग सुविधाओं में इजाफे का भी है। वहीं रेल कर्मचारियों की मांग पुरानी पेंशन व्यवस्था को बहाल करने की रही। रेलकर्मियों को दस लाख रुपए तक इनकमे रेलकर्मियों के परिजनों को लाभ की अपेक्षा भी की गई है। वहीं दूसरी ओर रेलवे आवासों के पुनरुद्धार सहित घोषणा में शामिल कर्मचारियों के आश्रितों के लिए मेडिकल एवं इन्जीनियरिग कालेज खोलने को अमलीजामा पहनाने की अपेक्षा है।

एनसीसी कैडेटों को हथियार चलाने की दी जानकारी

सादात (गाजीपुर) : नगर के समता इंटर कालेज पर एनसीसी कैंप के दूसरे दिन सोमवार को सैन्य अधिकारियों ने कैडेटों को माकड्रील, मानचित्र का अध्ययन के साथ ही हथियारों को चलाने की जानकारी दी। विपरीत परिस्थितियों में दुश्मनों से बचाव के टिप्स भी दिए गए। बीएचयू से आए एडम कमांडेंट कर्नल रवींद्र सिंह ने कैडेटों को उत्साहित किया। कहा कि एनसीसी के माध्यम से समाज सहित देश की सेवा करने का मौका मिलता है। इधर, समता पीजी कालेज पर सोमवार को होने वाला एनसीसी कैडेटों के फायरिग रेंज का उद्घाटन अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया। जेसीओ एसके सिंह ने बताया कि फायरिग रेंज का उद्घाटन अब बुधवार को होगा। लेफ्टिनेंट उदयभान सिंह, अशोक वुशवाहा, सर्वेश, प्रधानाचार्य राजेश यादव, शिक्षक अनिल यादव आदि थे।

शिविर में रेंजर्स ने सीखा टेंट का निर्माण करना

गाजीपुर : राजकीय महिला सनतकोत्तर महाविद्यालय में पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सोमवार को भी जारी रहा। प्रशिक्षण की शुरुआत बीपी-6 व्यायाम से हुई। छात्राओं ने श्रमदान करके प्रज्ञा रेंजर

उद्यान की साफ सफाई की। रेंजर्स ने टेंट निर्माण, विभिन्न प्रकार के गैजेट निर्माण का अभ्यास एवं पायनीयरिग प्रोजेक्ट का अभ्यास किया। पेट्रोल मीटिग के माध्यम से समूह गतिविधियों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रशिक्षण ट्रेनिग काउंसलर गोवर्धन प्रसाद गुप्ता एवं श्वेता कश्यप से प्राप्त किया। शिविर के दौरान जनपद के स्वीप कोआर्डिनेटर डा. अमित यादव ने कहा कि जनपद में सात मार्च को होने वाले मतदान में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्हें न केवल अपना वोट देने जाना है, अपितु स्वंयसेवी के रूप में अपने आसपास के लोगों को भी मतदान के लिए बूथ पर ले जाने की नागरिक जिम्मेदारी का वहन करना है। जनपद में युवा एवं महिला मतदाता का मतदान प्रतिशत कम है, इस कमी को इस वर्ष होने वाले विधानसभा मतदान में दूर करना है। इस अवसर पर प्रज्ञा रेंजर प्रभारी डा. शिवकुमार, प्रभारी प्राचार्य डा. सतेंद्र सिंह, डा. विकास सिंह, डा. शैलेंद्र कुमार यादव, डा. संतन कुमार राम, श्रीराम कुशवाहा आदि उपस्थित रहे। मंगलवार नव प्रवेशी रेंजर्स छात्राओं की दीक्षा के साथ इस प्रशिक्षण शिविर का समापन हो जाएगा।

रोज खरीद के नए नियम, किसानों की बढ़ा रहे उलझन

जमानियां (गाजीपुर) : हर रोज धान खरीद के नए नियम किसानों को उलझा रहे है। अब सोमवार से केंद्रों पर 600 की बजाय 300 क्विंटल धान खरीद का नियम लागू लदा था। तहसील क्षेत्र में कुल 25 केंद्र खोले गए है, जिसमें कई केंद्र बंद भी हो गए है। धान लेकर केंद्र पर पहुंचे शेरपुर गांव के किसान हीरालाल ने बताया कि तीन ट्रैक्टर

होने से किसानों की परेशानी बढ़ गई है। केंद्र प्रभारी भी इस व्यवस्था से परेशान हो गए हैं। धान के कटोरा के नाम से प्रसिद्ध जमानियां तहसील क्षेत्र में धान तौल कराने के लिए किसान परेशान हैं। नए नियम से अब केंद्र पर 300 क्विंटल ही धान तौल होगी। केंद्रों पर धान तौल कराने के लिए किसान ट्रैक्टर ट्राली में धान लेकर केंद्र पर पहुंच रहे हैं। हेतिमपुर स्थित खाद एवं रसद विभाग के केंद्र के बाहर सड़क किनारे सात ट्रैक्टर ट्राली में धान ट्राली में 215 क्विंटल धान तौल कराने के लिए सुबह ही केंद्र पर पहुंचे थे वही बघरी गांव के किसान भगवान यादव 200 क्विंटल धान लेकर केंद्र पर धान तौल कराने के लिए पहुंचे थे। केंद्र प्रभारी आशुतोष चौरसिया ने बताया कि अब एक दिन में एक कांटा से 300 क्विंटल धान तौल करना है। नए नियम से परेशानी बढ़ गई है, लेकिन अंतिम तिथि तक किसानों का धान तौल होगा।

मौनी अमावस्या 2022 : मौन का रखा मान, गंगा में पुण्य का स्नान, बाबा दरबार में लगाई हाजिरी

वाराणसी,। मौनी अमावस्या के अवसर पर वाराणसी के विभिन?न गंगा घाटों पर आस?था का हुजूम उमड़ पड़ा। मौनी अमावस?या के मौके पर गंगा के विभिन?न घाटों के किनारे श्रद्धालुओं ने गंगा नदी में के जल से उदयाचल भगवान भाष?कर को अर्घ?य प्रदान किया। वहीं गंगा में स?नान करने के बाद आस?थावानों ने बाबा दरबार में भी हाजिरी लगाई और साल भर के लिए पुण?य बेला पर बाबा का

पुण?य की डुबकी लगाई और स?नान के बाद दान की परंपरा का निर्वाह किया। मौन की महत?ता को श्रद्धालुओं ने परखा और मां गंगा आशीर्वाद मांगा। कोहरे में लिपटी मौनी अमावस?या की सुबह के मौके पर आस?था गंगा के साथ ही गोमती और वरुणा आदि नदियों के तट पर उमड़ा और परंपरा के अनुसार लोगों ने पुण?य की डुबकी लगाई और यथा संभव दान की परंपरा का भी निर्वहन किया। तड़के से ही गंगा में आस?थावानों ने पुण?य की डुबकी लगानी शुरू की तो दिन चढ़ने तक आस?था नदियों के तट पर नजर आती रही। वहीं गंगा में स?नान करने वालों ने बाबा दरबार में भी हाजिरी लगाई और जरूरतमंदों को दान कर पुण?य की कामना भी की। वहीं विभिन?न मंदिरों में भी सुबह से दर्शन पूजन का अनवरत क्रम शुरू हुआ जो दिन चढ़ने तक कायम रहा। ?? मौनी अमावस्या पर सनन दान के लिए भोर से ही श्रद्धालुओं की जुटान हुई। मौन की महत्ता को ध्यान में रखते हुए लोगों ने काशी में गंगा के विभिन?न घाटों पर सनन ध्यान किया। तिल-गुड़, गरम वस्त्र समेत शीत ऋतु से बचाने वाली वस्तुओं का दान किया। साथ ही श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन पूजन किया। इसके लिए कतार लगी रही। माघ माह का यह प्रमुख सनन पर्व मंगलवार को पड़ने से भौमवती अमावस्या का भी मान रहा।

स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानियों की याद में किया मौनधारण

मीरजापुर : जनपद के सभी कार्यालयों में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहूति देने वाले बलिदानियों की याद में दो मिनट मौन रखा गया। मौन रखकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धांजलि दी गई। मंडलायुक्त कार्यालय में आयुक्त योगेश्वरराम मिश्र, आयुक्त कार्यालय में अपर आयुक्त रमेश चंद्र, सुरेंद्र बहादुर संयुक्त विकास आयुक्त, सुरेश चंद्र मिश्रा संग अधिकारियों व कर्मचारियों ने सभा कक्ष में मौन धारण कर श्रद्धांजलि दी गई। कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार की अध्यक्षता में एडीएम शिव प्रताप शुक्ला, नमामि गंगे अमरेंद्र वर्मा, नगर मजिस्ट्रेट विनय सिंह, डिप्टी कलेक्टर अश्वनी कुमार सिंह, अभिनीत कुमार तथा अन्य अधिकारियों द्वारा याद किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण के बाद मौन धारण किया गया। विकास भवन में मुख्य विकास अधिकारी श्रीलक्ष्मी वीएस, सूचना कार्यालय, सभी तहसील, विकास खंड में भी 02 मिनट का मौन रखा गया। जवानों ने बलिदानियों को किया याद भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में पुलिस अधीक्षक कार्यालय, पुलिस लाइन व सभी थाना, चौकी में पुलिस अधिकारी एवं जवानों ने 02 मिनट का मौन धारण किया। पुलिस लाइन में पुलिस अधीक्षक अजय कुमार सिंह, एएसपी नगर संजय वर्मा, आपरेशन महेश अत्रि, एएसपी यातायात अरूण कुमार सिंह, नगर प्रभात राय, प्रतिसार निरीक्षक राम दुलार यादव रहे।

भजन रघुपति राघव व वैष्णवजन बोल से किया याद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर नारघाट स्थित शहीद उद्यान में प्रार्थना सभा हुई। इसमें विचारों को नमन करके श्रद्धांजलि अर्पित किया। गांधीजी के प्रिय भजन रघुपति राघव व वैष्णवजन बोल से याद किया। मुख्य अतिथि रविद्र भाई, बृजदेव पांडेय, अरूण मिश्रा, पं. रामलाल त्रिपाठी, मौलाना मोहम्मद हलीम, सरदार श्याम सुंदर सिंह, सुरेश मसीह ने विचार व्यक्त किया। संचालन आयुष सिंह व सम्मान शैलेंद्र अग्रहरि ने किया। संजीव सिंह, डा. संतोष सिंह, अशोक सिंह, रमाशंकर शुक्ला, डा. ध्रुवजी पांडेय, अमित श्रीनेत, डा. अमित सिन्हा रहे।

शक्तिनगर पुलिस द्वारा दबिश देकर 215 ली0 अवैध कच्ची शराब बरामद

०९ भट्ठीयां बरामद कर ०३ नफर अभियुक्तो को किया गया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
शैलेन्द्र कुमार

सोनभद्र/शक्तिनगर -पुलिस उप महानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अमरेन्द्र प्रसाद सिंह के कुशल निर्देशन में आगामी विधानसभा चुनाव-2022 को सकुशल शान्तिपूर्ण एवं निष्पक्ष सम्पनन कराये जाने के उदेश्य से जनपद में अवैध कच्ची शराब बरामदगी व उसके निर्माण पर प्रभावी रोकथाम लगाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में आज क्षेत्राधिकारी पिपरी प्रदीप सिंह चन्देल के निकट पर्यवेक्षण में थाना शक्तिनगर पुलिस द्वारा राजकिशन कालोनी में दबिश देकर 03 नफर अभियुक्तों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 215 ली0 अवैध कच्ची शराब एवं 09 भट्टी मय उपकरण सहित बरामद किया गया तथा मौके पर ही 05 कुन्तल लहन नष्ट किया गया । इस बरामदगी व गिरफ्तारी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओ मे अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्तों को चालान न्यायालय किया गया ।गिरफ्तार अभियुक्त क्रमश लोसो मराण्डी पुत्र स्व0 जय सिंह मराण्डी निवासी उपर वाकिशल थाना डुमरिया जिला पूर्वी सिंहभूमि झारखण्ड हाल पता राजकिशन कालोनी थाना शक्तिनगर सोनभद्र,साजन हासदा पुत्र सालखू हासदा निवासी बाकूलचन्दा थाना डुमरिया जिला पूर्वी सिंहभूमि झारखण्ड हाल पता- राजकिशन कालोनी थाना शक्तिनगर सोनभद्र ,मातू किसको पुत्र नारायन किसको निवासी वोडकाण्ड थाना बादाम पहाड़ जिला मयूरभंज उड़ीसा हाल पता- राजकिशन कालोनी थाना शक्तिनगर सोनभद्र । बरामदगी मे 215 लीटर अवैध कच्ची शराब व 9 भट्टी व अन्य कच्ची शराब बनाने के उपकरण एवं 5 कुंतल लहन मौके पर नष्ट किया गया गिरफ्तारी व बरामदगी करने वाली पुलिस टीम मे नि0 मिथिलेश कुमार मिश्र, प्रभारी निरीक्षक थाना शक्तिनगर,उ0नि0 राजेश कुमार मौर्य, थाना शक्तिनगर, उ0 नि 0 वंशराज यादव , थाना शक्तिनगर,हे0का0 शोभनाथ, का0 संतोष कुमार, का0 राहुल पटेल,का0 दिव्येश कुमार, का0 सुरेश कुमार यादव, का0 केवल कुमार,का0 राहुल सरोज ,म0का0 किरन यादव , म0का0 उमा सिंह,का0 अमित चौहान थाना शक्तिनगर सोनभद्र मौजूद रहे।

राष्ट्रपिता के विचारों को गलत तथ्यों से खत्म करने की कोशिश

गोविदपुर (सोनभद्र): बनवासी सेवा आश्रम के कार्यकर्ताओं और गांधी विचारधारा से जुड़े कार्यकर्ताओं के बीच सोमवार को आनलाइन परिचर्चा का आयोजन प्रदीप सिंह के अगुवाई में हुई। इसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मूल सिद्धांतों और उसके आधार पर सामाजिक जीवन जीने में आ रही अड़चनों को लेकर विचार रखे गए। वक्ताओं ने कहा कि एक वर्ग आज गांधी के विचारों को तोड़ मरोड़ कर उन्हें कमतर दिखाने का प्रयास कर रहा है, जो तथ्यों से परे है। सर्व सेवा संघ से जुड़े लेखक और गांधी कार्यकर्ता अरविंद अंजुम ने कहा कि लोग पाकिस्तान बंटवारे और भगत सिंह के फांसी को लेकर गांधी को जिम्मेदार बताते है, लेकिन ऐसा आरोप लगाने वाले यह नहीं जानते कि भगत सिंह को फांसी क्यों हुई। भगत सिंह को फांसी एक नवनियुक्त अंग्रेज सैनिक की हत्या उनके साथी द्वारा किये जाने और आरोपी के सरकारी गवाह बनने पर हुई। अंजुम ने कहा कि बटवारे में गांधी की हामी परिस्थिति जनक थी। इससे पहले नेहरु और सरदार पटेल ने हामी भर दी थी। लोग 50 करोड़ पाकिस्तान को देने को लेकर भी गांधी पर आरोप लगाते है, जबकि बटवारे में वह रकम देना ही था, अन्यथा देश की बदनामी होती। महराष्ट्र वर्धा के अविनाश काकड़े ने कहा कि महा मानव के विचार को तोड़ने मरोड़ने से कुछ नही होगा। सच्चाई कभी मरती नही है। हमें तय करना है कि हम किस तरह का जीवन जियें, कापी नही करना है। हमें मूल विचारों को आधार बनाकर आगे बढ़ना है। मीटिग में शुभा प्रेम, विमल, देवनाथ, यज्ञनारायण, रमेश, उमेश चौबे, केवला, बेचन राम समेत अन्य लोगों ने प्रतिभाग किया।

तमंचा बरामद, युवक गिरफ्तार

महुली (सोनभद्र): विढमगंज थाना पुलिस ने सोमवार को एक युवक के पास से 315 बोर का एक तमंचा व एक जिदा कारतूस बरामद किया है। पुलिस ने इस मामले में इंताफ हुसैन पुत्र मोहम्मद हनीफ निवासी ग्राम महुली को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी का आ?र्म्स एक्ट में चालान कर दिया। उप निरीक्षक शिव कुमार सिंह ने बताया कि विधानसभा चुनाव को देखते हुए चलाए जाए रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की जा रही है।

एनटीपीसी को मिला ग्रेट प्लेस टू वर्क का सम्मान

अनपरा (सोनभद्र) : ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टीट्यूट द्वारा भारत के सबसे बड़े एकीकृत ऊर्जा उत्पादक एनटीपीसी को सर्वश्रेष्ठ कार्यस्थलों-शीर्ष 30 की मान्यता से सम्मानित किया गया। यह लगातार पांचवां वर्ष है जो एनटीपीसी को मान्यता प्रदान की गई है। वरिष्ठ कार्यपालक जनसंपर्क अधिकारी रिकी गुप्ता ने बताया कि ग्रेट प्लेस टू वर्क इंडिया से यह सम्मान एनटीपीसी की अपने कर्मचारियों, सहयोगियों और भागीदारों के लिए एक आदर्श वातावरण बनाए रखने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह एनटीपीसी में मानव संसाधन नीतियों की परिपक्वता और अपने कर्मचारियों और हितधारकों के समग्र विकास और कल्याण को प्राप्त करने के लिए एनटीपीसी के वरिष्ठ प्रबंधन की प्रतिबद्धता का भी प्रमाण है। विदित हो कि भारत के सर्वश्रेष्ठ कार्यस्थलों के 5वें संस्करण में विनिर्माण क्षेत्र के 132 संगठनों ने मूल्यांकन किया। जिसके आधार पर ग्रेट प्लेस टू वर्क ने 2022 के निर्माण में सर्वश्रेष्ठ कार्यस्थलों में से शीर्ष 30 संगठनों की पहचान की है। ये संगठन उन लोगों के व्यवहार में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं जिन्हें उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए डिजाइन किया है और एक उच्च विश्वास संस्कृति बनाने के लिए प्रतिक्रिया पर कार्य करते हैं।

बिहार के राज्यपाल से वाराणसी में मिले सोनभद्र के शुभचितक

मधुपुर (सोनभद्र): बिहार के राज्यपाल फागू चौहान रविवार को वाराणसी स्थित सर्किट हाउस में रूके थे। इस दौरान उन्होंने सोनभद्र से अपने शुभचितकों को मिलने के लिए बुलाया संदेश भेजा था। रविवार को यहां से वाराणसी पहुंचे लोगों ने राज्यपाल से मुलाकात की। इस दौरान राज्यपाल ने उनका सुख-दुःख पूछा। उनका हालचाल जाना और सोनभद्र के बारे में भी जानकारी ली। उनसे मिलकर उनके शुभचितक गदगद हो गए। राज्यपाल ने सोनभद्र से जिता सिंह चौहान, हरिहर सिंह चौहान, डा. राम अवतार सिंह, राम कृत चौहान, लाल बिहारी चौहान, राजेंद्र चौहान, महेंद्र चौहान समेत कुछ अन्य लोगों को मिलने के लिए बुलावा भेजा था। उनके संदेश पर यहां से गए लोगों ने उनसे मिलकर खुशी जाहिर की। जिता सिंह, हरिहर सिंह चौहान व अन्य का कहना था कि बिहार के राज्यपाल सात बार विधायक रह चुके है और बसपा सरकार के दौरान मंत्री भी थे। इससे उनका सोनभद्र, मीरजापुर, गाजीपुर समेत अन्य जनपदों में दौरा होता था। तब से सोनभद्र के तमाम लोगों से उनका संबंध बेहतर हो गया था। इसी संबंध के तहत उन्होंने मिलने के बुलाया था। लोगों ने कहा कि राज्यपाल बनने के बाद भी उन्हें पुराने लोग याद रहे, यह हम लोगों के लिए सौभाग्य का विषय है। उनके इस सद व्यवहार से काफी प्रसनन्ता हुई।

किसानों ने कलेक्ट्रेट पर किया प्रदर्शन

सोनभद्र: भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के बैनर तले किसानों ने सोमवार को चार सूत्री मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया। किसानों ने 9 दिसंबर 2021 को घोषित समझौते को लागू करने की मांग उठाई। चेताया कि यदि मांग पूरी नहीं की गई तो किसानों का यह प्रदर्शन जारी रहेगा। प्रदर्शन कर रहे किसानों ने राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। इस दौरान किसानों ने कहा कि देश में कृषि कानूनों के विरुद्ध चल रहे आंदोलन के समझौते के समय कुछ मुद्दों पर किसान संगठनों और सरकार के बीच सहमति बनी थी। इस संबंध में कृषि एवं कल्याण मंत्रालय के सचिव संजय अग्रवाल द्वारा 9 दिसंबर को लिखित पत्र भेजा गया था। लेकिन सहमति के बिदुओं का पालन नहीं किया। किसानों ने मांग किया कि प्रधानमंत्री की घोषणा के अनुसार किसानों को एमएसपी मिलनी सुनिश्चित की जाए। इसके लिए एक कमेटी का गठन किया जाए, जिसमें संयुक्त किसान मोर्चा के प्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाए। किसान आंदोलन के दौरान किसानों पर दर्ज मुकदमें तत्काल प्रभाव से वापस लिए जाएं। भारत सरकार से संबंधित विभाग और एजेंसियों तथा दिल्ली सहित सभी संघशासित क्षेत्रों में आंदोलनकारियों एवं समर्थकों पर दर्ज किए गए आंदोलन संबंधी सभी केस भी तत्काल प्रभाव से वापस लेने की सहमति है। आंदोलन के दौरान शहीद परिवारों को हरियाणा, उत्तर प्रदेश सरकार ने भी मुआवजे की सैद्धांतिक सहमति दी है। पंजाब सरकार ने भी इसकी सार्वजनिक घोषणा की है। बिजली बिल पर किसान पर असर डालने वाले प्रावधानों पर संयुक्त किसान मोर्चा से चर्चा के उपरांत ही बिजली बिल संसद में पेश किया जाय के बाद भी अब तक ठोस कार्यवाही नहीं की गई। किसानों ने कहा कि इन मांगों को पूर्ण किया जाए। प्रदर्शन में मनीराम पटेल, संतोष पटेल, कांग्रेस पटेल, विक्रम पटेल, शिवनारायण, विकास पटेल, शिवाजी पटेल, रणधीर सिंह, मंगल सिंह, लक्ष्मीनाराण पटेल समेत अन्य किसान मौजूद रहे।

आजमगढ़ को हरा जेएमडी दिल्ली बना विजेता

गोविदपुर (सोनभद्र) : म्योरपुर ब्लाक के लिलासी गांव में राजा चंडोल बनवासी सेवा समिति के तत्वावधान में 37 वीं अंतर राज्यीय वालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन ग्राम प्रधान लिलासी रामनरेश जायसवाल ने किया। प्रतियोगिता मे नगर उटारी, प्रयागराज, मुजफ्फरनगर, आजमगढ़, मीरजापुर, छत्तीसगढ़, चंदौली, अनपरा, घोरावल सहित कुल 40 टीमो ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता का पहला सेमीफाइनल का मुकाबला अनपरा और आजमगढ़ के बीच खेला गया। जिसमें आजमगढ़ ने मुकाबला जीता। दूसरा सेमीफाइनल मीरजापुर व जेएमडी दिल्ली के बीच खेला गया, जिसमें जेएमडी दिल्ली जीत हासिल कर फाइनल में जगह पक्की की। फाइनल मुकाबला जेएमडी दिल्ली व आजमगढ़ के बीच खेली गई। जिसमें जेएमडी दिल्ली ने लगातार दो सेट 15-13, 15-9 से आजमगढ़ की टीम को हराकर फाइनल खिताब पर अपना कब्जा जमाया। इस मौके पर विधायक हरिराम चेरो, राजन चौधरी, रामनरेश जायसवाल, डा. लखन नाम जंगली आदि रहे।

आज न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे अधिवक्ता

मीरजापुर : डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष की अध्यक्षता में सोमवार को समस्त अधिवक्ताओं की सभागार में बैठक हुई। इसमें एक फरवरी को अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्य से विरत रहने का निणय्र लिया। अध्यक्ष जटाधर द्विवेदी ने कहा कि जिला प्रशासन ने मौनी अमावस्या को देखते हुए एक फरवरी को अवकाश की घोषणा की है। इसके चलते वादकारियों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। इसलिए वे लोग भी एक फरवरी को न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे। बैठक का संचालन सचिव रामसागर ने किया।

रेलवे मुख्य वाणिज्य प्रबंधक पीएस ने स्टेशन का किया निरीक्षण

मीरजापुर : उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मंडल के मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (पीएस) ने सोमवार को रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने समस्त कार्यालयों को देखते हुए मातहतों को निर्देशित किया कि यात्रियों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखते हुए अर्निंग बढ़ाने पर कार्य करें। साथ ही टी स्टालों और रेस्टोरेंट पर खाद्य एवं पेयजल सामग्रियों का समय पर जांच करते रहें। स्टाल संचालकों को हिदायत दी कि सामानों की खरीदारी पर ग्राहकों को रसीद जरूर दिया जाए। अगर किसी प्रकार की शिकायत मिली तो संबंधित के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (पीएस) शशिकांत सिंह ने आरक्षित टिकट काउंटर, अनारक्षित काउंटर, पार्सल घर, गुड्स शेड के साथ तीनों प्लेटफार्मों का निरीक्षण किया। आरक्षण काउंटर पर मौजूद कर्मियों को निर्देशित किया कि टिकट बुक करते समय आइडी जरूर जांच करें जाए। गुड्स शेड निरीक्षण के दौरान प्रभारी को निर्देशित करते हुए कहा कि माल लोडिग और अनलोडिग का डाटा पूरा फीड रखा जाए। जांच में गड़बड़ी मिली तो कार्रवाई निश्चित होगी। इस मौके पर स्टेशन अधीक्षक रवींद्र कुमार, सीएमआइ राजेश कुमार, सीआइटी परवेज सिद्दकी आदि रहे।

100 दिवसीय रीडिग कैंपेन के बारे में किया जागरूक

सोनभद्र: परिषदीय विद्यालयों में बच्चों की शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए उत्तरोत्तर प्रयास किया जा रहा है। इसके तहत निपुण भारत मिशन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत 100 दिवसीय रीडिग कैंपेन कैंप उन्होंने साप्ताहिक प्रशनेत्तरी में अधिक से अधिक बच्चों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए सभी अभिभावकों एवं शिक्षकों को प्रेरित किया। इस मौके पर उपस्थित सभी बच्चों से बुक रीडिग करवाया

जगह-जगह प्राथमिक विद्यालयों में संचालित किये जा रहे हैं। सोमवार को इस कैंपेन का आयोजन कंपोजिट विद्यालय घुवास कला में एआरपी ह्रदेश कुमार सिंह के नेतृत्व में हुआ। इस कैंप में 14 सप्ताह तक चलने वाले रीडिग कैंप की जानकारी उपस्थित शिक्षकों के साथ ही अभिभावकों को दी गई। साथ ही ई-पाठशाला फेज-6 को कैसे संचालित करना है, के बारे में जानकारी दी गई। कोविड-19 के गाइड लाइन का अनुपालन करते हुए मोहल्ला क्लास का संचालन कैसे करना है, इसके बारे में भी बताया गया। एआरपी ने सभी शिक्षकों के साथ बच्चों में शैक्षिक उनन्यन के बारे में अनुभव साझा किया। गया। साथ ही साप्ताहिक प्रशनेत्तरी भी करवाया गया। एआरपी ने कहा कि अभी बच्चों के लिए विद्यालय बंद हैं लेकिन आनलाइन क्लास और मोहल्ला क्लास के जरिए बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जाए, ताकि बच्चों की शिक्षा किसी भी स्तर पर बाधित न हो। यदि एक बार बच्चों की शिक्षा बाधित होती है तो उन्हें नए सिरे से फिर से पढ़ाना पड़ता है, क्योंकि लंबे समय तक पढ़ाई न होने से ज्यादातर बच्चों का तारतम्य टूट जाता है। इस मौके पर तमाम अभिभावक, बच्चे व शिक्षक मौजूद रहे।

अज्ञात वाहन से बाइक सवार युवक की मौत

सोनभद्र: राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के बेलखुरी- नौगढ़ मार्ग पर महेवा गांव के पास रविवार की रात अज्ञात वाहन के चपेट में आने से बाइक सवार जितेंद्र कुमार 27 पुत्र स्व. सुक्कर सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। संयोग रहा कि राब?र्ट्सगंज से घर लौट रहे जितेंद्र के भाई उमेश कुमार ने उसे सड़क पर मृत पड़ा देखा। इस पर वह चीखने चिल्लाने लगा। शोर सुनकर आसपास के लोगों की भीड़ मौके पर लग गई। सूचना पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। सोमवार को पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने शव परिजनों को सौंप दिया। कबरी गांव का निवासी जितेंद्र चतरा में एक मेडिकल स्टोर पर काम करता है। रविवार की रात करीब साढ़े नौ बजे मेडिकल स्टोर बंद होने के बाद वह बाइक से घर लौट रहा था। उसे किसी ने नहीं देखवा गया।

कार्यशाला के आयोजन को वक्ताओं ने सराहा

मीरजापुर : बरकछा स्थित राजीव गांधी दक्षिणी परिसर काशी हिदू विश्वविद्यालय द्वारा पांच दिवसीय आनलाइन कार्यशाला का शुभारंभ सोमवार को हुआ। मुख्य अतिथि व कुलपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम टेकिन्कल यूनिवर्सिटी प्रो. पीके मिश्रा सहित वक्ताओं ने कहा कि दक्षिणी परिसर में ऐसे कार्यशाला का आयोजन सराहनीय कदम है। कार्यशाला के लिए समस्त प्रमुख वक्ताओं की भी प्रशंसा की। कार्यशाला में कंप्यूटर प्रोग्रामिग लैग्वेज आर व पाइथन के द्वारा साइंटिफिक रिसर्च राइटिग एवं डिस्क्रिप्टिव डाटा एनालिसिस पर विचार व्यक्त किया। संरक्षक प्रोफेसर अनिल कुमार त्रिपाठी, डायरेक्टर विज्ञान संस्थान, काशी हिदू विश्वविद्यालय, विशेष अतिथि प्रो. मधुलिका अग्रवाल डीन विज्ञान संकाय एवं प्रोफेसर चिरंजीव कुमार, डीन शैक्षणिक आईआईटी (आईएसएम) धनबाद की आनलाइन शामिल हुए। आचार्य प्रभारी व कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार मिश्रा ने महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं समक्ष दीप प्रज्वलन तथा विश्वविद्यालय के कुलगीत गायन के साथ किया गया। स्वागत संबोधन डा. आर एस मिश्रा ने किया। कार्यशाला पर संक्षिप्त विवरण डा. मनोज कुमार मिश्रा ने किया। कार्यशाला के लिए 1000 से ज्यादा प्रतिभागियों ने आवेदन किया था। डा. सुभाष प्रताप सिंह तथा आयोजन समिति सदस्य डा. दीपिका कौर, डा. विभोर कांत, डा. राघवेंद्र रमन मिश्रा रहे। धन्यवाद ज्ञापन डा. राजीव कुमार ने किया।

बोरे की कमी से खरीद बंद, केंद्र प्रभारी नदारद

अहरौरा (मीरजापुर) : राजगढ़ ब्लाक के क्षेत्रीय सहकारी समिति सोनपुर में सोमवार को भी बोरे की कमी से धान खरीद नहीं हो सकी। किसान क्रय केंद्र पर दो दिन से इंतजार कर रहे हैं किसानो ने आरोप लगाया कि बोरे के अभाव में धान बेचने के लिए उन्हें दिक्कत हो रही है। दो दिनों से ठंड के मौसम में धान बेचने के लिए क्रय केंद्र पर इंतजार कर रहे हैं। सोमवार को भी धान खरीद नहीं शुरू होने से उन्हें जलालत झेलनी पड़ रही है। आरोप लगाया कि क्रय केंद्र प्रभारी भी क्षेत्रीय सहकारी समिति पर नहीं आ रहे हैं। इससे समस्या जस की तस है। क्रय केंद्र प्रभारी सुधाकर सिंह ने बताया कि उनकी तबियत ठीक न होने से वह क्षेत्रीय सहकारी समिति पर नहीं आ रहे हैं। इससे उन्हें बोरे की कमी के बारे में जानकारी नहीं है। फोटो : 25--धान क्रय केंद्र पर व्यापारी और बिचौलिए हावी,

किसान परेशवे धान क्रय केंद्र पर बड़े व्यापारी व बिचौलिया हावी हैं। व्यापारियों ने पहले किसानों के घर से धान खरीदा, अब सिस्टम बदलने से क्रय केंद्र पर पहुंचकर जबरदस्ती अपना अंगूठा लगाने में लगे हैं। जबकि किसान महीनों से केंद्र पर ट्रैक्टर पर धान लादकर अपनी बारी का इंतजार कर रहे है। किसानों का आरोप है कि रोजाना बिचौलिया और व्यापारी अपना-अपना सूची बनाकर केंद्र प्रभारी को दे रहे है। सोनबरसा धान क्रय केंद्र बंद होने से किसान ज्यादा परेशान हैं। वहीं प्राइवेट धान क्रय केंद्र धनसीरिया पर तौल मनमाने तरीके से की जा रही है।

आंगनबाड़ी भवन निर्माण की हुई जांच, नींव तोड़ने का आदेश

भावां (मीरजापुर) : राजगढ़ ब्लाक के लहास ग्राम में निर्माणाधीन आंगनबाड़ी केंद्र में घटिया सामग्री हटाने के साथ मानक के अनुसार कार्य न होने पर नींव तोड़कर फिर से नींव भरकर कार्य कराने का निर्देश बीडीओ शैलेंद्र सिंह ने दिया। जिम्मेदार ग्राम प्रधान, ग्राम विकास अधिकारी एवं तकनीकी सहायक को हिदायत देते हुए मानक के अनुसार कार्य करवाने के निर्देश दिए। इसका असर यह हुआ कि सोमवार को दोपहर में ग्राम प्रधान द्वारा तीन नंबर के ईंट, घटिया क्वालिटी के सीमेंट को हटा लिया गया और कहा गया कि अगले दिन नींव को तोड़कर दूसरा नींव डाला जाएगा। ग्रामीण शिवपूजन ने ग्राम प्रधान, सेक्रेटरी और तकनीकी सहायक के खिलाफ निर्माण कार्य में हो रही धांधली की शिकायत एसडीएम मड़िहान व बीडीओ और बाल विकास अधिकारी राजगढ़ से किया था। बीडीओ राजगढ़ ने जेई आरइएस और कार्य प्रभारी से जांच कराई तो अनियमितता पाई गई थी।

हरभजन सिंह का खुलासा, टीम इंडिया की कप्तानी के लायक था मैं, किस वजह से किसी ने नहीं लिया मेरा नाम

नई दिल्ली, । भारतीय क्रिकेट टीम की कप्तानी को लेकर इन दिनों काफी चर्चा चल रही है। विराट कोहली ने टी20 की कप्तानी छोड़ी इसके बाद उनको वनडे की कप्तानी से चयमकर्ताओं ने हटाया। साउथ अफ्रीका सीरीज के बाद उन्होंने टेस्ट की कप्तानी से भी इस्तीफा दे दिया। अब अगले टेस्ट कप्तान को लेकर अटकलें लगाई जा रही है। पूर्व भारतीय दिग्गज हरभजन सिंह ने कहा कि टीम इंडिया का कप्तान हर किसी को बनने का मौका नहीं मिला। वह भी कप्तानी करने के काबिल थे लेकिन उनके बारे में कभी बात नहीं की गई। भज्जी ने कहा, ठयह भी एक उपलब्धि ही है कि कोई भी मेरी कप्तानी के बारे में बात नहीं करता। मैं नहीं जानता कि किसी ने कभी भी बीसीसीआइ में से मेरे लिए किसी ने भी इस बारे में बात आगे चलाई हो, नहीं क्योंकि ये जरूरी था। अगर जो आप उनकी फेवरेट की लिस्ट में नहीं है वो जिनके पास ताकत है,

तो फिर आपको यह सम्मान नहीं मिलने वाला है। लेकिन इस मुद्दे को छोडि़ए। मुझे अच्छे से पता है कि मैं कप्तानी के लिए कितना काबिल था क्योंकि हम लगातार कप्तानों को निर्देश दिया करते थे उनको अपनी सलाह देते थे।ठ हरभजन ने इस बात पर जोर दिया कि वह कप्तानी करने की काबिलियत रखते थे। वह बतौर कप्तान टीम इंडिया को अपना योगदान दे सकते थे लेकिन मौका नहीं दिया गया। गौरतरब है कि इंडियन प्रीमियर लीग में हरभजन ने मुंबई इंडियंस टीम की कप्तानी करते हुए चैंपियंस लीग का खिताब जीता था। नेटवर्क 18 से बात करते हुए हरभजन ने कहा, ठइसमें कोई बड़ी बात नहीं है कि मैं भारतीय टीम का कप्तान बना या नहीं बना। इसको लेकर मेरे अंदर कोई पछतावा भी नहीं है मुझे अपने देश की टीम का कप्तान बनने का मौका दिया गया या नहीं। मैं एक खिलाड़ी के तौर पर देश के लिए खेल कर और योगदान देते हुए ही काफी खुश रहा।

Under 19 world cup सेमीफाइनल में कैसा होगा Eng vs Afg प्लेइंग इलेवन, किन खिलाडियों को मिलेगी जगह

नई दिल्ली,। अंडर 19 विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में आज अफगानिस्तान की टीम का सामना इंग्लैंड की टीम के साथ होने जा रहा है। यह मैच पूर्व चैंपियन टीम और पहली बार फाइनल में पहुंचने की उम्मीद रखने वाली टीमों के बीच है। इंग्लिश टीम की कप्तानी टाम प्रेस्ट के हाथों में होगी जबकि अफगानी टीम की कमान सुलेमान सफी के हाथ होगी। इस मैच से पहले हम जान लेते हैं आज के इस अहम मुकाबले में किस प्लेइंग इलेवन के साथ उतर सकती हैं दोनों टीमें। अफगानिस्तान की टीम अंडर-19 विश्व कप के लिए देर से पहुंची, जिसके बाद आइसीसी को उसके ग्रुप चरण के मुकाबलों का कार्यक्रम बदलना पड़ा, लेकिन अफगान टीम ने

सेमीफाइनल में पहुंचकर इस फैसले को सही साबित किया। अब अफगान टीम मंगलवार को इंग्लैंड को हराकर पहली बार फाइनल में पहुंचकर इतिहास रचना चाहेगी। अफगानिस्तान की टीम ने सिर्फ दूसरी बार अंडर-19 विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। इससे पहले 2018 में न्यूजीलैंड में भी टीम अंतिम चार में पहुंची थी। जार्ज थॉमस, जैकब बेथेल, टाम प्रेस्ट (कप्तान), जेम्स रेव, विलियम लक्सटन, जार्ज बेल, रेहान अहमद, एलेक्स हार्टन (विकेटकीपर), जेम्स सेल्स, टाम एस्पिनवाल, जोशुआ बायडेन नांगेलिया खरोटे, बिलाल सईदी, अल्लाह नूर, सुलेमान सफी (कप्तान), एजाज अहमदजई, अब्दुल हादी, मोहम्मद इशाक (विकेटकीपर), इजहारुलहक नवीद, नूर अहमद, बिलाल सामी, नवीद जादरान

U19 वर्ल्ड कप का पहला सेमीफाइनल खेला जाएगा जानिए कब और कहां देखे मुकाबला

नई दिल्ली, वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड की मेजबानी में खेले जा रहे अंडर 19 विश्व कप का पहला सेमीफाइनल 1 फरवरी यानी मंगलवार को खेला जाना है। इस

मैच में पूर्व चैंपियन इंग्लैंड का सामना उलटफेर कर अंतिम चार में पहुंची अफगानिस्तान की टीम से है।यह मैच पूर्व चैंपियन टीम और पहली बार फाइनल में पहुंचने की उम्मीद रखने वाली टीमों के बीच है। इंग्लिश टीम की कप्तानी टाम प्रेस्ट के हाथों में होगी जबकि अफगानी टीम की कमान सुलेमान सफी के हाथ होगी। इस मैच से पहले हम जान लेते हैं आज के इस अहम मुकाबले में किस प्लेइंग इलेवन के साथ उतर सकती हैं दोनों टीमें। अफगानिस्तान की टीम अंडर-19 विश्व कप के लिए देर से पहुंची, जिसके बाद हालांकि रोहित शर्मा के चोटिल होने की खतरा बना रहता है और आने वाले अप्रैल महीने में वो 35 साल के हो जाएंगे। हालांकि कई लोगों का मानना है कि चयनकर्ताओं को इस महत्वपूर्ण भूमिका के लिए किसी और को देखना चाहिए। वैसे आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ऐसा नहीं मानते हैं। आस्ट्रेलियाई दिग्गज ने रोहित का समर्थन करते हुए कहा कि एक लीडर के रूप में उनका रिकार्ड काफी अच्छा है। आइसीसी के वेबसाइट पर रिकी पोंटिंग ने कहा कि मैं तब मुंबई इंडियंस में था जब रोहित शर्मा ने इस टीम की कप्तानी संभाली थी। मुझे मुंबई ने टीम की कप्तानी के लिए खरीदा था, लेकिन शुरुआती कुछ मैचों के बाद मैं अच्छा नहीं खेल रहा था इसलिए मुझे एक और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी को टीम इंग्लिश टीम काफी मजबूत है लेकिन अफगानी टीम एक और उलटफेर करने की तलाश में रहेगी। आज के इस मुकाबले से पहले जान लेते हैं इससे जुड़ी तमाम अहम बातें। अफगान टीम मंगलवार को इंग्लैंड को हराकर पहली बार फाइनल में पहुंचकर इतिहास रचना चाहेगी। अफगानिस्तान की टीम ने सिर्फ दूसरी बार अंडर-19 विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। इससे पहले 2018 में न्यूजीलैंड में भी टीम अंतिम चार में पहुंची थी। चलिए जान लेते हैं कब और कहां उठा सकते है क्रिकेट फैंस इस मैच का मजा।

EXCLUSIVE INTERVIEW: थ्री इन वन पैकेज हैं केएल राहुल : गौतम गंभीर

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) की नई टीम लखनऊ सुपरजाइंट्स ने सोमवार को अपना लोगो जारी किया। टीम के मेंटर गौतम गंभीर का मानना है कि केएल राहुल अच्छे कप्तान

साबित होंगे। इस मौके पर टीम के मालिक संजीव गोयनका और मेंटर गौतम गंभीर से अभिषेक त्रिपाठी ने एक साथ बातचीत की। पेश हैं मुख्य अंश संजीव गोयनका- लोगो में कई कारक हमने देखे। उसमें क्रिकेट के तत्व है जिसमें बल्ला और गेंद है। दूसरी चीज हमने देखी कि इसमे एक राष्ट्रीय अनुभूति होनी चाहिए। इसमें तिरंगे के तीनों रंग हैं। यह एक विकसित पेड़ के जैसा है। हमारा मानना था कि इसको देखकर राष्ट्र की अनुभूति होनी चाहिए और ऐसा ही हुआ संजीव गोयनका- देखिए सुपरजाइंट्स मुझे तो पसंद है लेकिन यह सिर्फ मेरे पसंद की बात नहीं है। हमने एक प्रतियोगिता के आधार पर नाम मांगे थे जिसमें सबसे ज्यादा सुझाव इसी नाम पर आए गौतम गंभीर- यह बहुत संवेदनशील चीज है जो इस तरह साझा नहीं कर सकते। सभी तैयारी कर रहे होंगे और हम भी तैयारी करके ही जाएंगे। नीलामी टेबल पर कई बार चीजें अलग होती हैं। सक्रिय रहना जरूरी है। उम्मीद है जो खिलाड़ी हम चाहते हैं वे हमें मिल जाएं लेकिन अगर इसके 70-80 प्रतिशत खिलाड़ी भी लेने में सफल रहे तो हम खुश होंगे। गौतम गंभीर- सब स्कीम में हैं लेकिन यह नहीं कहा जाता कि कौन इसमे होगा। यह इस पर निर्भर करेगा कि कोई भी खिलाड़ी हमारी संरचना में फिट बैठता है या नहीं। उम्र का खिलाड़ी हो तो उससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता लेकिन उससे महत्वपूर्ण चीज होगी कि जो हम चाहते हैं और वह उस नंबर पर खेल सकता हो। सिर्फ यूपी पर ही ध्यान केंद्रित नहीं होगा। संयोजन ज्यादा महत्वपूर्ण होगा गौतम गंभीर- कोरोना की तीसरी लहर को देखते हुए ऐसा हुआ नहीं लेकिन अगर वो लगता तो चीजें और आसान होती। हालांकि, हमारे कोच, सहायक कोच नीलामी में होमवर्क करके ही जाएंगे। अगर ट्रायल हो जाते हैं तो चीजें आसान हो जाती हैं। हम वो कौशल भी देख पाते हैं क्योंकि पिछले डेढ़-दो साल से घरेलू क्रिकेट नहीं हुआ है। घरेलू खिलाड़ी भी महत्वपूर्ण रहने वाले हैं लेकिन अभी हमारे सामने जो हैं हमे उसमे से सर्वश्रेष्ठ लोगों को लेना है। हम यह नहीं सोच सकते कि ट्रायल नहीं हुए या रणजी ट्राफी नहीं हुई। जो सर्वश्रेष्ठ होगा वो करने की कोशिश करेंगें चुननी होगी जो विजयी संयोजन दे सके। यूपी के कुछ खिलाड़ी फिट होंगे तो हम उन्हें लेने की कोशिश करेंगे। अगर खिलाड़ी में क्षमता नहीं है लेकिन वह सिर्फ उप्र का है इस आधार पर हम उसे नहीं खरीदेंगे। क्षेत्र की जगह हम क्षमता को महत्व देंगे। यह यूपी की पहली टीम है और हम कोशिश यही करेंगे कि यहां के लोगों को जोड़ें। जब खिलाड़ियों को चुनेंगे तो यह नहीं देखेंगे कि वह महाराष्ट्र, उप्र, राजस्थान या बंगाल का है। यही प्रशन मुझसे फुटबाल में लोगों ने किया कि आपकी टीम कोलकाता (एटीके-मोहन बागान) की है तो आप वहां के खिलाड़ियों को ज्यादा महत्व देंगे। मैंने कहा ऐसी बात नहीं हमारी टीम में कोलकाता के कई खिलाड़ी हैं

पूर्व चैंपियन इंग्लैण्ड का सामना उलटफेर कर अंतिम चार में पहुंची अफगानिस्तान की टीम

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड की मेजबानी में खेले जा रहे अंडर 19 विश्व कप का पहला सेमीफाइनल 1 फरवरी यानी मंगलवार को खेला जाना है। इस मैच में पूर्व चैंपियन इंग्लैंड का सामना सेमीफाइनल में जगह बनाई है। इससे पहले 2018 में न्यूजीलैंड में भी टीम अंतिम चार में पहुंची थी। चलिए जान लेते हैं कब और कहां उठा सकते हैं क्रिकेट फैंस इस मैच का मजा। जानें- कब, कहां और

उलटफेर कर अंतिम चार में पहुंची अफगानिस्तान की टीम से है। इंग्लिश टीम काफी मजबूत है लेकिन अफगानी टीम एक और उलटफेर करने की तलाश में रहेगी। आज के इस मुकाबले से पहले जान लेते हैं इससे जुड़ी तमाम अहम बातें। अफगानिस्तान अंडर 19 क्रिकेट टीम के खिलाड़ी (फोटो ट्विटर पेज ळट्टी 19ˇदेत् मुज् सेमीफाइनल में कैसा होगा हु न्ु का प्लेइंग इलेवन, किन खिलाडि़यों को मिलेगी जगह यह भी पढ़ें अफगान टीम मंगलवार को इंग्लैंड को हराकर पहली बार फाइनल में पहुंचकर इतिहास रचना चाहेगी। अफगानिस्तान की टीम ने सिर्फ दूसरी बार अंडर-19 विश्व कप के कैसे इस रोमांचक मुकाबला का लाइव टेलिकास्ट और स्ट्रीमिंग देख सकेंगे। इंग्लैंड अंडर -19 क्रिकेट टीम और अफगानिस्तान अंडर -19 क्रिकेट टीम का सेमीफ़ाइनल मैच कब खेला जाएगा? इंग्लैंड अंडर -19 क्रिकेट टीम और अफगानिस्तान अंडर -19 क्रिकेट टीम के सेमी-फाइनल मैच मंगलवार 1 फरवरी । इंग्लैंड अंडर -19 क्रिकेट टीम और अफगानिस्तान अंडर -19 क्रिकेट टीम के सेमी-फाइनल मैच कहां खेला जाएगा? अफगानिस्तान अंडर 19 टीम के खिलाड़ी (फोटो ट्विटर पेज) : इतिहास रचना चाहेगी अफगानिस्तान की टीम, सामने होगी पूर्व चैंपियन टीम

इस खिलाड़ी को बनना चाहिए भारतीय टेस्ट टीम का कप्तान, केएल राहुल फिलहाल इस लायक नहीं- रिकी पोंटिंग

नई दिल्ली, । विराट कोहली के टेस्ट कप्तान के पद से इस्तीफा देने से भारतीय टीम को परेशानी हुई है। 33 वर्षीय इस खिलाड़ी ने

इस महीने की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत की टेस्ट सीरीज में 1-2 से मिली हार के एक दिन बाद कप्तानी छोड़ने की घोषणा की थी। विराट कोहली के बाद किसे ये जिम्मेदारी सौंपी जाए ये एक बड़ा सवाल है, लेकिन रोहित शर्मा टेस्ट कप्तान बनने की होड़ में सबसे आगे दिख रहे हैं। रोहित शर्मा भारतीय वनडे और टी20 टीम के कप्तान हैं और इन दिनों टेस्ट प्रारूप में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। हालांकि रोहित शर्मा के चोटिल होने की खतरा बना रहता है और आने वाले अप्रैल महीने में वो 35 साल के हो जाएंगे। हालांकि कई लोगों का मानना है कि चयनकर्ताओं को इस महत्वपूर्ण भूमिका के लिए किसी और को देखना चाहिए। वैसे आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ऐसा नहीं मानते हैं। आस्ट्रेलियाई दिग्गज ने रोहित का समर्थन करते हुए कहा कि एक लीडर के रूप में उनका रिकार्ड काफी अच्छा है। आइसीसी के वेबसाइट पर रिकी पोंटिंग ने कहा कि मैं तब मुंबई इंडियंस में था जब रोहित शर्मा ने इस टीम की कप्तानी संभाली थी। मुझे मुंबई ने टीम की कप्तानी के लिए खरीदा था, खिलाड़ी को टीम में आने के लिए जगह बनानी पड़ी। टीम के मालिक और मैनेजमेंट ये जानना चाहते थे कि मुंबई की कप्तानी करने के लिए मेरे हिसाब से सबसे बेहतर कौन है।

महानगरों की रोमांचक महाजंग में दबंग दिल्ली ने यू मुम्बई को 6 अंक से हराया

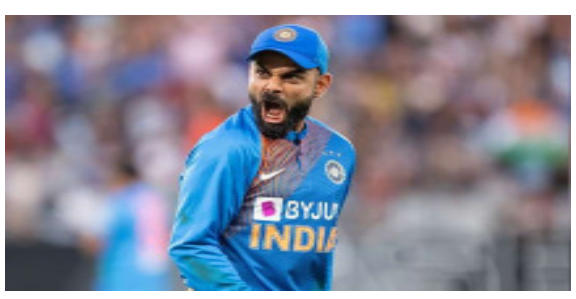

बेंगलुरु,। वीवो प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के आठवें सीजन के राइवलरी वीक के तीसरे मैच में सोमवार को दो महानगरों की जंग में दिल्ली ने बाजी मारी। दिल्ली की टीम ने मुम्बई को 36-30 से हराते हुए अंक तालिका के शीर्ष पर अपनी स्थिति और मजबूत कर ली है। दिल्ली की 15 मैचों में यह नौवीं जीत है जबकि मुम्बई को 14 मैचों में जनवरी से 6 फरवरी तक चलने वाले राइवलरी वीक के इस बड़े मुकाबले में मुम्बई के लिए कोई खिलाड़ी सुपर-10 या हाई-5 नहीं लगा सका। अभिषेक सिंह ने सबसे अधिक 8 अंक लिए। दोनों टीमें एक-एक बार ऑल आउट हुईं लेकिन असल अंतर दिल्ली के रेडरों ने पैदा किया। उन्होंने 18 के मुकाबले 25 अंक लिए। डिफेंस में हालांकि स्कोर 6-3 कर दिया। दिल्ली के लिए आशू डू ओर डाई रेड पर गए और दो डिफेंडर साफ कर दिए। मुम्बा के लिए सुपर टैकल आन था। आशू गए लेकिन हरेंदर और फजल ने उनका शिकार कर स्कोर 5-8 कर दिया। फिर अभिषेक सिंह डू ओर डाई रेड पर गए लेकिन मंजीत ने फिर बाजी मार ली। संदीप दो के डिफेंस में रेड पर गए। डिफेंडरों ने

चौथी हार मिली है। वह पांचवें स्थान पर कायम है। दिल्ली की जीत के नायक रहे विजय मलिक, जिन्होंने कुल 12 अंक जुटाए। नीरज नरवाल ने सब्सीट्यूट के तौर पर खेलते हुए 6 अंक लिए और आशू मलिक ने 8 अंक जुटाए। डिफेंस में मंजीत चिल्लुर ने चार अंक लिए। 30 मुम्बई (10) ने दिल्ली (8) से बेहतर प्रदर्शन किया। चार मिनट के बाद स्कोर 3-3 था। दिल्ली ने हालांकि दो लगातार अंकों के साथ दो अंक की लीड ले ली। आठवें मिनट में वी. अजीत कुमार मुम्बा के लिए पहली डू ओर डाई रेड पर गए लेकिन मंजीत छिल्लर ने उनका शिकार कर उन्हें लपक लिया। स्कोर 7-9 हो गया था। फिर दिल्ली ने हरेंदर को बाहर कर लीड दो की कर ली। पहले हाफ में तीन मिनट बचे थे और शिवम की बदौलत मुम्बा ने पहले तो 10-10 की लीड ली और फिर 11-10 से आगे हो गए।

टेस्ट कप्तानी छोड़ने के बाद विराट कोहली ने की दिल की बात, बताया- अब क्या है इरादा

नई दिल्ली, । विराट कोहली ने टी20 वर्ल्ड कप 2021 के बाद भारतीय टी20 टीम की कप्तानी छोड़ दी थी। इसके बाद उन्हें वनडे टीम की कप्तानी से बीसीसीआइ ने हटा दिया और फिर उन्होंने सबको चौंकाते हुए टेस्ट टीम की भी कप्तानी छोड़ दी। टेस्ट टीम

की कप्तानी छोड़ने के बाद विराट कोहली ने अपनी बातें सबके साथ साझा करते हुए बताया कि आगे उनकी क्या योजना है। हाल के घटनाक्रम के बारे में बात करते हुए कोहली ने कहा कि वो टीम में एक बल्लेबाज के तौर पर अधिक योगदान देने में सक्षम हो सकते हैं और उन्हें इस पर गर्व है। फायरसाइड चैट विथ वीके के एक एपिसोड में कोहली ने कहा कि सबसे पहले आपको इस बात की समझ होनी चाहिए कि आपने क्या हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया है और आपने उसे प्राप्त किया है या नहीं। हर चीज का एक कार्यकाल और समय अवधि होती है और आपको इसके बारे में पता होना चाहिए। एक बल्लेबाज के रूप में, आप टीम को और अधिक देने में सक्षम हो सकते हैं, इसलिए उस पर गर्व करें। कप्तान के रूप में 68 में से 40 टेस्ट मैच जीतने वाले कोहली ने कहा कि एक खिलाड़ी को कप्तान बनने के लिए किसी टीम का कप्तान होना जरूरी नहीं है। कोहली ने अपने पूर्व कप्तान एमएस धौनी का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने धौनी से तब भी इनपुट लिया जब वो भारतीय टीम के कप्तान नहीं थे। कोहली ने कहा कि लीडर बनने के लिए आपको कप्तान होने की आवश्यकता नहीं है। जब एमएस धौनी टीम में थे, ऐसा नहीं था कि वो लीडर नहीं थे, वो ऐसे व्यक्ति थे जिनसे हम इनपुट लेना चाहते थे। जीतना या नहीं जीतना यह आपके हाथ में नहीं है, उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना और हर दिन बेहतर होना कुछ ऐसा नहीं उन्होंने आगे कहा कि मैं कुछ समय एमएस धौनी के नेतृत्व में खेला और फिर मैं कप्तान बना, मेरी मानसिकता इतने समय से एक ही रही है।

राशिफल

मेष-: आज कार्यक्षेत्र में कुछ व्यवधान हो सकता है, इसलिए सावधान रहें और अपना पूरा ध्यान अपने काम पर रखें. छात्रों को पढ़ाई में थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यवसाय से जुड़े जातक अपने।

वृष-: आज का दिन आपके लिए सुखद रहेगा. व्यापार के सिलसिले में विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। किसी करीबी के आने से घर का माहौल खुशनुमा बना रहेगा। आपके मन में नए विचार आएंगे। परिवार के साथ बाहर जा।

मिथुन-: आज आप अपने काम में आगे बढ़ पाएंगे और योजना के अनुसार काम भी कर पाएंगे. आज अधूरे काम भी सफलतापूर्वक पूरे होंगे। गृह संबंधित योजनाओं पर विचा करने की आवश्यकता है। जब आप अपने प्रिय से दूर हो।

कर्क-: आज आप जो काम करेंगे वो पूरे होंगे और आपको सफलत के साथ-साथ प्रशंसा भी मिलेगी. दांपत्य जीवन में खुशियां बनी रहेंगी और आज का दिन आपके लिए इतना अनुकूल रहेगा कि आपको धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ती।

सिंह-: आज आपका दिन सामान्य रहेगा। धर्म में आस्था बढ़ेगी, घर में किसी धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। घर में रिश्तेदार आते-जाते रहेंगे। साइंस के छात्रों के लिए दिन बेहतरीन रहेगा करियर के अच्छे ।

कन्या-: आज आप बौद्धिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे. आपको आर्थिक लाभ मिलेगा। आज आपके पास लोगों से मिलने और अपने शौक पूरा करने के लिए पर्याप्त खाली समय है।आपकी खुशी में कोई बाधा नहीं आएगी। आप जो नह.।

तुला-: यदि आप व्यापार कर रहे हैं तो आपको नए अवसर मिलने की संभावना रहेगी और आज आपकी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से हो सकती है जिससे आप पहले कभी नहीं मिले लेकिन उससे मिलना आपके लिए फायदेमंद साबित होग।

वृश्चिक-: आज आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित योग करें. अविवाहितों के लिए दिन अच्छा है, आपकी शादी तय हो सकती है। आपके चेहरे पर मुस्कान आ जाएगी। दोस्तों के साथ बाहर मूवी द।

धनु-: आज अपने करियर पर विशेष ध्यान दें. आज आपको अपने जीवन साथी के प्यार का तोहफा मिलेगा। आलस्य की अधिकता रहेगी। निर्माण सुख में वृद्धि होगी। नौकरी में उन्नति के योग हैं। अधिकारियों का सहयोग मिल।

मकर-: आज अपने करियर पर विशेष ध्यान दें. आज आपको अपने जीवन साथी के प्यार का तोहफा मिलेगा। आलस्य की अधिकता रहेगी। निर्माण सुख में वृद्धि होगी। नौकरा में उन्नति के योग हैं। अधिकारियों का सहयोग मिल।

कुंभ-: आज बेवजह की चिंताएं आपको परेशान कर सकती हैं, अनावश्यक खर्चों से खुद को दूर रखना होगा. छात्रों को मनचाहा परिणाम पाने के लिए आज कड़ी मेहनत करनी होगी। कार्यक्षेत्र में आपको अपने वरिष्ठ अधिका।

मीन-: आज आपका दिन थका देने वाला रहेगा. घर के कामों में हड़बड़ी रहेगी। यात्रा पर भी जा सकते हैं, यात्रा के दौरान किसी रिश्तेदार से मुलाकात हो सकती है। आज किसी को उधार देने से बचें। आज के दिन की ।

सम्पादकीय

भारत में पति और पत्नी के बीच यौन संबंधों को दुष्कर्म के दायरे में लाया जाना हो सकता है खतरनाक

इन दिनों दिल्ली उच्च न्यायालय की एक पीठ में भारतीय दंड संहिता (आइपीसी) में पतियों को दुष्कर्म के आरोपों से अपवादस्वरूप प्रदान की जाने वाली छूट पर जोरदार बहस हो रही है। भारत में दुष्कर्म के अपराध को परिभाषित करने वाली आइपीसी की धारा 375 में निहित अपवाद कहता है कि 'अपनी पतनै के साथ पुरुष द्वारा किया जाने वाला संभोग पतने की उम्र पंद्रह वर्ष से अधिक होने की दशा में दुष्कर्म नहीं माना जाएगा।' इसी अपवाद को आरआइटी फाउंडेशन, आल इंडिया डेमोक्रेटिक वूमेन एसोसिएशन और दो व्यक्तियों ने दिल्ली हाई कोर्ट में चुनौती दी है। दूसरी ओर दिल्ली सरकार, ह्रदय फाउंडेशन नामक गैर सरकारी संस्था और मेन वेलफेयर ट्रस्ट के अमित लखानी तथा ऋत्विक बिसारिया इस अपवाद को खत्म करने का विरोध कर रहे हैं। भारत में पति और पतने के बीच यौन संबंधों को दुष्कर्म के दायरे में लाए जाने पर सबसे ज्यादा जताई जा रही चिंताओं में से एक यह है कि दुर्भावना रखने वाली पतिन्यों द्वारा अपने पतियों और उनके परिवारों को परेशान करने के लिए दुष्कर्म के झूठे आरोप लगाए जा सकते हैं। हालांकि यह एक जायज चिंता है, लेकिन याचिकाकर्ताओं और यहां तक कि खंडपीठ ने भी इसे यह कहते हुए दबाने की कोशिश की है कि 'हर कानून का दुरुपयोग किया जा सकता है, लेकिन यह कानून नहीं लाने का आधार नहीं हो सकता।' यह तर्क देखने में तो जायज लगता है, लेकिन अगर हम वास्तव में प्रत्येक नागरिक के समान अधिकारों के बारे में चिंतित हैं तो एक नया कानून लाते समय जमीनी हकीकत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इस मामले में याचिकाकर्ताओं ने वैवाहिक दुष्कर्म को कानूनी तौर पर अपराध घोषित करवाने के लिए मिसाल के तौर पर विभिनन देशों के कानूनों को सामने रखा है, लेकिन उन राष्ट्रों में झूठी गवाही देने, झूठे आरोप लगाने और गलत तरीके से कैद करवाने के विरुद्ध लागू मजबूत सुरक्षा उपायों का जिक्र तक नहीं किया है। जब भारत में पुरुषों पर झूठे मामले दर्ज करने वाली महिलाओं पर मुकदमा चलाने की बात आती है तो ये याचिकाकर्ता गायब हो जाते हैं। आपने पिछली बार कब किसी महिला को अपने पति और उसके परिवार वालों पर दहेज उत्पीड़? का झूठा आरोप लगाने के अपराध में जेल जाते हुए सुना था? कब किसी ऐसे पुरुष को पर्याप्त मुआवजा दिए जाने के बारे में सुना था जिसे दुष्कर्म के झूठे मुकदमे में फंसा दिया गया था? शायद इन दोनों ही सवालों का जवाब कभी नहीं मिलेगा। वर्ष 2005 में सुप्रीम कोर्ट ने दहेज उत्पीड़? कानूनों के दुरुपयोग को 'कानूनी आतंकवाद' करार दिया। अंततः वर्ष 2014 में उसने दहेज उत्पीड़? के मुकदमों में पतियों की तत्काल गिरफ्तारी नहीं किए जाने के दिशानिर्देश पारित किए। उसके बाद से वैवाहिक विवादों में प्राथमिकी दर्ज करते समय दहेज उत्पीड़? के साथ घरेलू हिंसा और अप्राकृतिक यौन शोषण की धाराएं भी जुड़वाई जाने लगीं, ताकि किसी भी तरह से महिला के पति और उसके परिवार की गिरफ्तारी करवाई जा सके। इन दिनों वैवाहिक विवादों में दर्ज शिकायतों में विभिनन आपराधिक धाराओं का एक विशेष और खतरनाक मिश्रण तैयार किया जाने लगा है। जैसे-पूरे परिवार के खिलाफ दहेज और घरेलू हिंसा का आरोप, पति के खिलाफ अप्राकृतिक यौन संबंध का आरोप, ससुर के खिलाफ दुष्कर्म का आरोप और देवर के खिलाफ छेड़छाड़ का आरोप लगाए जाने लगे हैं। सिर्फ एक पंक्ति में लिख दिए गए आरोप में ही उसके पति और उसके पूरे परिवार को तत्काल गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया, भले ही ऐसा कोई अपराध कभी हुआ ही न हो। कुछ पुरुषों ने 90 दिन जेल में बिताए हैं, जबकि कुछ अन्य ने छह महीने तक बिताए हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें केवल दहेज का मामला होने पर अदालत से जमानत अवश्य मिल जाती। अगर दुष्कर्म का झूठा आरोप अब लगा रही उसकी पतने झूठ बोल रही है? अगर कोई महिला दुष्कर्म की शिकायत करती है तो पुलिस एफआइआर दर्ज करने से इन्कार नहीं कर सकती है। वैवाहिक दुष्कर्म के मामलों में वह अपराध हुआ भी था या नहीं, यह पता लगाने के लिए पुलिस क्या प्रारंभिक जांच करेगी? आज एक महिला को दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज करवाने के लिए अपने बयान के अलावा और कुछ नहीं चाहिए।

जानिये आरक्षण बनाम योग्यता पर क्या है न्यायालय का नया विजन

उच्चतम न्यायालय ने विश्व भर में आरक्षण देने के सिद्धांतों का विस्तार से जिक्र करते हुए हाल ही में कहा है कि उच्च अंक लाना मेरिट की पहचान नहीं है। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि एक परीक्षा किसी व्यक्ति की प्रतिभा तय नहीं कर सकती। यही वजह है कि अब विश्वविद्यालयों ने अंकों के आधार पर दाखिला देने के बजाय कई टेस्ट लेने अनिवार्य कर दिए हैं, जैसे वस्तुनिष्ठ परीक्षा, ग्रुप डिस्कशन, पर्सनालिटी टेस्ट, इंटरव्यू, वायवा, लिखित परीक्षा और व्यक्तिगत प्रेजेंटेशन आदि। आरक्षण बनाम योग्यता की बहस में अदालत ने कहा कि आरक्षण योग्यता के खिलाफ नहीं, बल्कि यह सामाजिक न्याय है, इसलिए मेरिट के साथ आरक्षण भी दिया जा सकता है। किसी भी प्रकार से इसे विरोधाभासी नहीं मानना चाहिए। वैसे इस फैसले के साथ नीट पीजी में दाखिले की बाधित राह खुली है। खास बात यह है कि ओबीसी यानी अन्य पिछड़ा वर्ग और आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्गों यानी ईडब्लूएस के लिए आरक्षण को लेकर शीर्ष न्यायालय का जो स्पष्ट रुख सामने आया है, वह इस मसले पर चल रही कई बहसों के लिए एक तरह से जरूरी जवाब भी साबित हुआ है। न्यायालय के अनुसार प्रतियोगी परीक्षाएं उत्कृष्टता और व्यक्तियों की क्षमताओं को नहीं दर्शाती है। ऐसे में कुछ वर्गों को मिलने वाले सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक लाभ को प्रतिबिंबित नहीं किया जा सकता। अतः अब सरकार को सोचना है कि कैसे सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के संबंध में योग्यता को प्रासंगिक बनाया जाए। कोई एक परीक्षा केवल व्यक्ति की वर्तमान क्षमता को प्रतिबिंबित कर सकती है, लेकिन उनकी क्षमताओं या उत्कृष्टता को नहीं, जो कि जीवित अनुभवों, बाद के प्रशिक्षण और व्यक्तिगत चरित्र से भी आकार लेते रहते हैं। संविधान में आरक्षण सामाजिक न्याय का प्रतिमान : संविधान का अनुच्छेद 16 अवसरों की समानता की बात करता है। आरक्षण का न्यायशास्त्र वास्तविक समानता को मान्यता देता है, न कि केवल औपचारिक समानता को। मालूम हो कि न्यायालय ने अपने पिछले निणर्न्यों में कहा है कि अनुच्छेद 15 (4) और 15 (5) अनुच्छेद 15 (1) के अपवाद नहीं हैं। संविधान के अनुच्छेद 16 (4ए) के अनुसार, राज्य को अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के कर्मचारियों की पदोनन्ति के मामलों में उस स्थिति में आरक्षण के लिए प्रविधान करने का अधिकार है, यदि राज्य को लगता है कि राज्य के अधीन सेवाओं में अनुसूचित जाति और जनजाति का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है। उल्लेखनीय है कि पिछले दो दशकों में संविधान में 102वें और 104वें संशोधन जैसे कई संशोधन किए गए हैं। संविधान के अनुसार अनुच्छेद 15 (4) और 15 (5) हर देशवासी को मौलिक समानता देते हैं। यह समानता समाजवादी समानता है। सभी जानते हैं कि देश में आज भी भरपूर असमानता व्याप्त है, जिसे दूर करने के लिए सरकार लगातार प्रयास करती रही है। लेकिन सरकार को सदैव द्वंद्वों का सामना करना पड़ा है। दरअसल आरक्षण को लेकर चर्चा और बहस जन-मानस के केंद्र में रहती है और अकसर एक बात कही जाती है कि आरक्षण से मेरिट का नुकसान होता है और इस कारण आरक्षण को समाप्त कर देना चाहिए। आरक्षण सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़े कुछ जातिगत समुदायों को दिया जाता है। हालांकि ऐसा हो सकता है कि जिन समुदायों को आरक्षण दिया जा रहा है, उसके कुछ सदस्य पिछड़े न भी हों। इसके विपरीत यह भी संभव है कि जिन समुदायों को आरक्षण नहीं दिया जा रहा है, उसके कुछ सदस्य पिछड़े हों। लेकिन कुछ सदस्यों के आधार पर समुदायों के भीतर मौजूद सुधार के लिए दी जाने वाली आरक्षण की व्यवस्था को खारिज नहीं किया जा सकता है। ऐसे में उच्चतम न्यायालय के फैसले ने साफ कर दिया कि आरक्षण क्यों आवश्यक है। दुख की बात यह है कि जो आरक्षण कई वजहों से अवसरों और अधिकार से वंचित रह गए तबकों को सामाजिक न्याय मुहैया कराने की एक व्यवस्था है, वह कई वजहों से राजनीतिक बहसों में उलझता रहा है। लेकिन अब शीर्ष अदालत के ताजा रुख के बाद उम्मीद की जानी चाहिए कि इस मसले पर विचार और बहसों में एक स्पष्ट दृष्टि आ पाएगी। उल्लेखनीय है कि हमारे संविधान के नीति निदेशक तत्वों में भी सामाजिक न्याय के लिए सरकार क्या कदम उठाएगी, इसका भी उल्लेख मिलता है। देश की राजनीतिक पाटिन्यां सदैव सामाजिक न्याय को

लेकर तमाम वादे करती रही हैं, उसी में से आरक्षण उनका सबसे महत्वपूर्ण चुनावी मुद्दा रहता है। राजनीतिक दल आरक्षण को लेकर बड़े-बड़े वादे करते देखे जाते हैं, यहां तक कि सभी सीमाओं को पार करते हुए 50 प्रतिशत से अधिक का आरक्षण देने वाले वादे भी सामने आते रहते हैं, जो सवीच्च न्यायालय के आदेश का कदापि पक्षधर नहीं होता। समाज में बराबरी लाने का एक औजार : यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि आरक्षण समाज में बराबरी लाने का एक औजार है। अगर खुली प्रतियोगी परीक्षाएं अभ्यथिन्यों को प्रतिस्पर्धा के समान अवसर उपलब्ध कराती हैं, तो वहीं आरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि अवसरों को इस तरह से वितरित किया जाए, ताकि पिछड़ गए वर्ग ऐसे अवसरों से समान रूप से लाभान्वित हो सकें, जो आमतौर पर अनेक बाधाओं के कारण इससे छूट जाते हैं। उच्च शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण के संदर्भ में एक आम प्रचलित दलील रही है कि इससे योग्यता के सिद्धांत का हनन होता है। सच तो यह है कि देश में नौकरियों या उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण एक ऐसी विशेष व्यवस्था रूप में लागू की गई है, जिसके जरिये समाज में कई वजहों से पिछड़ गए तबकों को उनके वाजिब अधिकार दिलाने के लिए सशक्तीकरण की एक अहम प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाता है। वैसे भी एक लोकतांत्रिक और सभ्य समाज में उसका सक्षम हिस्सा अपने बीच के वंचित वर्गों को उनके अधिकार दिलाने के लिए अपनी ओर से पहल करता है। इस मसले पर हमारे देश में जमीनी स्तर पर समाज की हकीकत और सार्वजनिक जीवन में वस्तुस्थिति को नजरअंदाज करके आरक्षण पर सवाल उठाए जाते रहे हैं, जो कदापि उचित नहीं। बता दें कि आरक्षण का उद्देश्य संविधान निर्माण के समय समाज में हाशिये पर जीवन बिता रहे लोगों को समाज की मुख्य धारा में लाना था। लेकिन इस तथ्य को स्वीकारने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि राजनीतिक कारणों से अब तक यह संभव नहीं हो पाया है। आरक्षण एवं योग्यता के बीच संतुलन : उल्लेखनीय है कि आरक्षण की 50 प्रतिशत सीमा किसी भी कानून द्वारा निर्धारित नहीं की गई है, लेकिन इसे सवीच्च अदालत द्वारा निर्धारित किया गया है। इसलिए यह सभी के लिए बाध्यकारी है। दिलचस्प बात यह है कि सवीच्च न्यायालय के वर्ष 1992 के निणर्य के बावजूद कई राज्यों जैसे महाराष्ट्र, तेलंगाना, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश ने 50 प्रतिशत आरक्षण की सीमा का उल्लंघन करते हुए कई कानून पारित किए हैं। यहां तक कि तमिलनाडु, हरियाणा एवं छत्तीसगढ़ ने भी आरक्षण की 50 प्रतिशत सीमा का उल्लंघन करने वाले कानून लागू कर रखे हैं। इसलिए जरूरी है कि विभिनन समुदायों को आरक्षण देते समय प्रशासन की दक्षता को भी ध्यान में रखा जाए। सीमा से अधिक आरक्षण के कारण वास्तव में योग्यता की अनदेखी होती है, जिससे संपूर्ण प्रशासन की दक्षता प्रभावित हो सकती है। इसलिए आरक्षण एवं योग्यता के बीच संतुलन जरूरी है। बहरहाल, आरक्षण का एकमात्र उद्देश्य कम सुविधा संपनन समुदायों के ऐतिहासिक शोषण के मुद्दे को संबोधित करना है, लेकिन एक निश्चित सीमा से अधिक योग्यता को भी उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए। यह भी एक सामाजिक न्याय ही है। समय-समय पर समीक्षा आवश्यक ज्ञ उच्चतम न्यायालय ने हाल के एक मामले में कहा था कि सरकार को समय-समय पर आरक्षण नीति और इसकी प्रक्रिया की समीक्षा करनी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इसके लाभ उन लोगों तक पहुंच रहे है, जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता है। पिछले साल जस्टिस अरुण मिश्रा, जस्टिस इंदिरा बनर्जी, जस्टिस विनीत शरण, जस्टिस एमआर शाह और जस्टिस अनिरुद्ध बोस की बेंच ने आंध्र प्रदेश सरकार के फैसले को खारिज करते हुए अपने फैसले में कहा था कि आरक्षण 50 प्रतिशत से ज्यादा नहीं हो सकता और अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों के विद्यालयों में सौ प्रतिशत लोग इन्ही समुदायों के नहीं रखे जा सकते है। इतना ही नहीं, कोर्ट ने यह भी कहा था कि एससी/ एसटी वर्ग के संपनन लोग अपने समुदाय के अन्य लोगों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलने दे रहे हैं, इसलिए आरक्षण प्राप्त करने वाली जातियों की समीक्षा और संशोधन करना चाहिए। साथ ही बेंच ने याद दिलाते हुए कहा था कि संविधान में आरक्षण का प्रविधान केवल एक दशक के लिए ही था, लेकिन यह अभी तक खत्म नहीं हुआ है। ऐसे में यह तो कहा ही जा सकता है कि आरक्षण का मामला राजनीतिक है और यही वजह रही है कि आरक्षण की न समीक्षा होती है और न ही इसमें कोई संशोधन होता है। यहां तक कि अक्सर देखा जाता है कि राजनीतिक दल अपने वादों में भरपूर आरक्षण बांटते फिरते है, जिससे एक वर्ग खुश होता है तो दूसरे वर्ग को लगता है कि आरक्षण, योग्यता पर प्रहार कर रहा। परिणामस्वरूप आरक्षण के मामले में अब साफ-साफ निर्देश आ जाने से सरकार और अदालत दोनों की राह आसान होगी और राजनीतिक दलों को भी इस मसले पर राजनीति करने का अवसर ज्यादा नहीं मिल सकेगा, जिसका फायदा राजनीतिक पाटिन्यां हमेशा से उठाती रही हैं। समग्रता में देखें तो यह सच्चाई है कि आरक्षण, वंचित वर्गों को आगे बढ़े वर्गों के साथ प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करने और वास्तविक समानता सुनिश्चित करने में आने वाली बाधाओं को दूर करने में सक्षम बनाता है। इसलिए आरक्षण सामाजिक न्याय का प्रतिमान है। लेकिन एक बात गौर करने वाली है कि आरक्षण और योग्यता में सामंजस्य बनाकर चलना चाहिए। इसलिए आरक्षण की समय-समय पर समीक्षा करनी होगी। इसके अलावा, 50 प्रतिशत से अधिक का आरक्षण देना सही नहीं कहा जा सकता। इसलिए जरूरी यह भी है कि आरक्षण की इस सीमा की समीक्षा और संशोधन समयानुसार होता रहे, जिससे कभी भी आरक्षण, योग्यता का गला न घोंट सके। फिलहात तो यही कहा जा सकता है कि सवीच्च अदालत का आरक्षण पर फैसला जनहित में है और सभी को इसे स्वीकार करना चाहिए।

आवश्यकता है सधे कदम बढ़ाने की, नए भारत का निर्माण और सुभाष चंद्र की विचारभूमि

यह इतिहास को व्यस्त रखने वाला समय है। ऐतिहासिक प्रक्रियाओं और उसके भागीदारों को लेकर यह दौर काफी सक्रिय है। इसलिए ही विगत 23 जनवरी को जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती मनाई गई और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इंडिया गेट परिसर में नेताजी की एक विशेष प्रतिमा का अनावरण किया, तो बोस और तत्कालीन परिस्थितियों पर पुनः विमर्श प्रारंभ हो गया। स्वयं में यह एक पेचीदा विषय है, क्योंकि दिलचस्प ढंग से परस्पर विरोधी विचार के लोग बोस को 'अपना-कहते हैं नेताजी सुभाष चंद्र बोस की लोकप्रिय निर्मिति कुछ इस प्रकार की है कि वह एक ही संदर्भ में दो अलग छोर पर नजर आते हैं। इस सूत्र कथन को विस्तार दें तो बोस की एक छवि अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले राष्ट्रभक्त और इस बलिदान के प्रति कृतज्ञ राष्ट्र के आपसी संबंधों से निर्मित हुई है, तो दूसरी छवि बोस द्वारा अपनाए जा रहे 'बलिदान के तरीकों- की आलोचना से बनी है। अर्थात एक तरफ के सुभाष वर्दी पहने, सीना ताने, कुशाग्र बुद्धि वाले एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने राष्ट्र के लिए सबकुछ न्यौछावर कर दिया तो दूसरी तरफ के सुभाष 'भटके हुए देशभक्त- हैं। एक सुभाष की मृत्यु वायुयान दुर्घटना में नहीं हुई है तथा 'आध्यात्मिक सुभाष- के रूप में वह भारत में रहे हैं तो दूसरे सुभाष 18 अगस्त, 1945 को काल-कवलित हो चुके हैं। संभावनाओं के आधार पर एक सुभाष की कल्पना ऐसे प्रधानमंत्री के रूप में की जाती है जो नेहरू से बेहतर साबित होते तो वहीं दूसरी तरफ के सुभाष को गैर-लोकतांत्रिक व्यक्ति के रूप में चिन्हित किया जाता है। ऐसी कुछ और श्रेणियों का इस्तेमाल किया जा सकता है, किंतु इतिहास की समझदारी यही कहती है कि 'यह या वह- की शैली से निकला निष्कर्ष समावेशी नहीं होता। हमें किसी व्यक्तित्व का मूल्यांकन समग्रता से करना चाहिए। और जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तो बेहतर यही होगा कि हम बोस के योगदान को इस रूप में देखें कि नए भारत के निर्माण में वह हमें कौन सी राह दिखाते हैं। यानी 21वीं सदी के हिंदुस्तान के लिए बोस किस रूप में प्रासंगिक हैं। होती है। ऐसे में यह देखना रोचक होगा कि इसकी प्राप्ति के लिए क्या बोस के पास कोई आर्थिक माडल था और क्या वह अर्थनीति आज भी प्रासंगिक है? वर्ष 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में दिए गए अध्यक्षीय भाषण से बोस के आर्थिक विचारों का पता चलता है जहां वह विस्तार से 'आर्थिक पुनर्संगठन- का खाका प्रस्तुत कर रहे थे।

भड़काऊ बयानों पर तंत्र का दोहरा रवैया ही सामाजिक विभाजन की खाई को बढ़ाता है

देश के पांच राज्यों में फिलहाल विधानसभा चुनाव की सरगमिन्यां तेज है। चुनावी तपिश में नेताओं की जुबान खूब फिसल रही है। अक्सर उनके वक्तव्य मर्यादा की रेखा लांघकर 'हेट स्पीच' यानी भड़काऊ या नफरती भाषण की श्रेणी में आ जाते हैं, जिससे सामाजिक सौहार्द बिगड़ता है। हेट स्पीच सियासी गलियारों तक सीमित नहीं है। कई अन्य मंचों पर भी ऐसे भाषण खूब दिए जा रहे हैं। बीते दिनों हरिद्वार में आयोजित धर्म संसद में शामिल हुए कुछ लोगों के बिगड़े बोल सुखिन्यां बने थे। उन पर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है। यह अच्छी बात है, लेकिन जब किसी दूसरे समुदाय के नेताओं द्वारा जहरीले बयान दिए जाते हैं तो हमारा तंत्र चुप्पी साध लेता है। इसके विपरीत उन्हीं समुदायों को चोट पहुंचाने वाली बातों से निपटने के लिए अलग से कानून बनाए गए हैं। जबकि सनातन परंपराओं से जुड़ी धाराओं को लेकर प्रलाप बहुत आम है। जैसे पिछले कुछ समय से ब्राह्मणों के खिलाफ तरह-तरह की बातें करना राजनीतिक दलों का प्रिय शगल बन गया है, परंतु इसका विरोध करना तो दूर किसी दल ने इसका संज्ञान लेना भी मुनासिब नहीं समझा। ऐसे में मूलभूत प्रशन यही है कि क्या ऐसे दोहरे रवैये से कभी सामाजिक सौहार्द बन सकता है इसी संदर्भ में भारतीय दंड संहिता 153-ए तथा 295-ए के उपयोग, उपेक्षा तथा दुरुपयोग का उदाहरण भी विचारणीय है। पहली धारा धर्म, जाति और भाषा आदि आधारों पर विभिनन समुदायों के बीच द्वेष, शत्रुता और दुर्भाव फैलाने को दंडनीय बताती है। दूसरी धारा किसी समुदाय की धार्मिक भावना को जानबूझकर ठेस पहुंचाने या उसे अपमानित करने को दंडनीय कहती है। विचित्र बात यह है कि पिछले कई दशकों से एक समुदाय विशेष के नेता खुलकर दूसरे समुदाय के देवी-देवताओं, प्रतीकों और ग्रंथों आदि का अपमान करते रहे हैं। इंटरनेट मीडिया पर इसके असंख्य उदाहरण हैं। एक समुदाय विशेष के नेता खुलेआम धमकी देते हैं कि पंद्रह मिनट के लिए पुलिस हटा ली जाए तो वे क्या से क्या कर सकते हैं। दुख की बात यही है कि ऐसे बयानों पर शासन-प्रशासन या न्यायपालिका कभी ध्यान नहीं देते और देते भी हैं तो उन्हें अनसुना कर उपेक्षा कर देते हैं। इससे हेट स्पीच को परोक्ष प्रोत्साहन मिलता है। तभी ऐसे बयान बार-बार दोहराए जाते हैं। इससे एक समुदाय में दबंगई का भाव और दूसरे में हीनता की ग्रंथि पनपती है, जिससे सामाजिक तानाबाना बिगड़ता है। दूसरी ओर कुछ मतावलंबियों की मजहबी किताबों में ही दूसरे मत को मानने वालों के विरुद्ध तरह-तरह की घृणित बातें और आह्वान हैं। ऐसे संप्रदाय अपनी किताब को दैवीय और पवित्र मानते हैं और उनके खिलाफ उन्हें कुछ भी स्वीकार्य नहीं। तब अपने प्रति वैसी बातों पर दूसरे समुदायों को आपत्ति का अधिकार है या नहीं? यह विडंबना तब और बढ़ समुदाय को विशेष शैक्षिक-तकनीकी स्वतंत्रता तथा सहायता देते हैं। इस तरह कुछ समुदायों के विरुद्ध घृणा फैलाने को किसी समुदाय की 'शिक्षा' का अंग मानकर परोक्ष रूप से राजकीय सहायता तक मिलती है।

बैंकों से व्यापक कर्ज मिलने के बावजूद सुधर नहीं रही किसानों की दशा

महाराष्ट्र सरकार ने बीते तीन वर्षों के दौरान किसानों के 39 हजार करोड़ रुपये के कर्जे माफ किए, बावजूद इसके वहां बीते साल लगभग ढाई हजार किसानों ने आत्महत्या की। वर्ष 2020 में यह आंकड़ा 2547 था। यह सरकारी आंकड़ा है कि औसतन हर दिन दो हजार किसान खेती से मुंह मोड़ रहे हैं। देश के आधे से अधिक किसान परिवार कर्जे में दबे हैं और औसतन 74,121 रुपये प्रति परिवार कर्जा है। इसमें से 69.9 प्रतिशत कर्ज बैंक या सहकारी समितियों से है, जबकि 20.5 प्रतिशत साहूकारों से लिया गया है। हालांकि भारत की अर्थव्यवस्था में खेती क्षेत्र का योगदान 14 प्रतिशत है, लेकिन इससे कुल रोजगार का 42 प्रतिशत सृजित होता है। एक तरफ जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित और चरम मौसम ने देश में दस्तक दे दी है, वहीं दूसरी तरफ बढ़ती आबादी का पेट भरने के लिए आत्मनिर्भरता अनिवार्य है। जब देश में खेती का 55 फीसद बरसात पर निर्भर हो तो जाहिर है कि खेती-किसानी के प्रति कोताही देश की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा हो सकता है। एक साल तक चले कृषि कानून विरोधी आंदोलन में सबसे बड़ी भूमिका निभाने वाले पंजाब में दिसंबर 2021 में 1200 करोड़ के किसानी कर्जे माफ किए गए, लेकिन देखते ही देखते 14 हजार हेक्टेयर अर्थात कुल जमीन के 0.33 प्रतिशत पर खेती बंद हो गई। राजस्थान में 61.8 फीसद किसान-परिवार कर्जदार हैं तो उत्तर प्रदेश में आधे (50.8 प्रतिशत) किसान-परिवारों पर कर्जा है। मध्य प्रदेश के 45.7 फीसद किसान-परिवारों पर कर्ज की रकम चढ़ी है तो उत्तराखंड में ऐसे किसान-परिवारों की संख्या 43.8 प्रतिशत हैं। राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय की रिपोर्ट से यह भी झलकता है कि वर्ष 2013 से 2019 के बीच कई राज्यों में किसान-परिवारों पर मौजूद कर्जे में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई है। मिसाल के लिए, असम के किसानों पर छह साल की अवधि में कर्जा 382 प्रतिशत बढ़ा है तो त्रिपुरा के किसानों पर कर्जे की रकम में 378 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। मिजोरम में तो किसान-परिवारों पर कर्जे की रकम

में 709 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। हरियाणा ऐसा राज्य है जिसकी 81 फीसद जमीन खेती लायक है, जहां की दो तिहाई आबादी खेती पर निर्भर है, जहां 65 प्रतिशत लोग गांव में रहते है और यदि वहां की कृषि विकास साल दर साल घटती जाए तो यह न केवल बड़े संकट, बल्कि सामाजिक विघटन की तरफ भी इशारा है। हाल ही में समाप्त हुए कृषि कानून विरोधी आंदोलन का असर हरियाणा के गांवों में गहराई से देखा गया, उसके राजनीतिक कारक भले ही अन्य कई हों, लेकिन जमीनी हकीकत तो यह है कि देश में कृषि आय के मामले में तीसरे स्थान पर रहने की बावजूद यहां किसान साल भर में औसतन एक चपरासी के वेतन से भी कम आमदनी प्राप्त कर पाता है। एक तो विभिनन विकास कार्य में जमीन का अधिग्रहण और फिर बढ़ते परिवार के साथ जोत का आकार बहुत कम होना, खेती में लागत बढ़?, कर्ज के चस्के में फंसा किसान और गैर पारंपरिक फसलों के जरिये जल्दी पैसा कमाने की चाहत ने हरियाणा में खेती के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा कर दिया है। नेशनल सैंपल सर्वे आर्गेनाइजेशन की हालिया जारी सालाना रिपोर्ट बताती है कि हरियाणा के किसान की मासिक आय औसतन 22,841 रुपये है। यह तब है जब इस आय में परिवार द्वारा खेती के लिए किए गए श्रम-मजदूरी की गणना की नहीं गई है। जाहिर है कि यह कमाई एक सबसे नीचे के पायदान के सरकारी कर्मचारी से भी बहुत कम है। हरियाणा में लगभग 24.8 लाख किसान हैं और 15.28 लाख खेतिहर मजदूर। लगभग 49.32 प्रतिशत किसानों के पास जोत की जमीन एक हेक्टेयर से भी कम है, जबकि एक से दो हेक्टेयर वाले किसान 19.29 फीसद हैं। 17.79 प्रतिशत किसानों के पास चार से दस हेक्टेयर जमीन का मालिकाना हक है और महज 2.52 फीसद किसान ही 10 हेक्टेयर से अधिक के मालिक हैं। शायद तभी राज्य में खेती छोड़? वालों की संख्या भी बढ़ रही है। वर्ष 1983 में राज्य में जहां 71 प्रतिशत पुरुष किसान थे, जो आज घट कर 35 प्रतिशत रह गए है, जबकि इस अवधि में महिला किसानों की संख्या 90 से कम हो कर 61 प्रतिशत रह गई है। यही कारण है कि हरियाणा का किसान हर दिन कर्ज के दल दल में धंसता जा रहा है। राज्य के 45,95,805 धरती पुत्रों पर इस समय 7931 हजार करोड़ कर्ज की देनदारी है। एकबारगी लगता है कि कर्जदार की संख्या किसान से ज्यादा क्यों है? असल में कई किसानों पर दो-तीन किस्म के कर्जे चढ़े है, बीज, खाद, बागवानी, पशु या मछली पालन या सिंचाई के लिए। इस दुश्चक्र में फंसे लगभग ढाई लाख किसान हर साल बैंक में डिफाल्टर हो जाते हैं। इसके अलावा आढ़ती या स्थानीय सूद खोर का कर्जा अलग होता है। एक बात जान लेना जरूरी है कि किसान को न तो कर्ज चाहिए और न ही बगैर मेहनत के कोई छूट या सब्सिडी। इससे बेहतर है कि उसके उत्पाद को उसके गांव में ही विपणन करने की व्यवस्था और सुरक्षित भंडारण की स्थानीय व्यवस्था की जाए। किसान को सब्सिडी से ज्यादा जरूरी है कि उसके खाद-बीज-दवा के असली होने की गारंटी हो तथा किसानी के सामानों को नकली बेचने वाले के लिए सख्त से सख्त सजा का प्रविधान हो। अधिक फसल उत्पादन की दशा में किसान को बिचौलियों से बचा कर सही दाम दिलवाने के लिए जरूरी है कि सरकारी । सब्जी-फल-फूल जैसे उत्पाद की खरीद-बिक्री स्वयं सहायता समूह या सहकारी के माध्यम से करना कोई कठिन काम नहीं है।

संक्षिप्त समाचार

सुरक्षा परिषद में यूक्रेन पर वोटिंग से अनुपस्थित रहा भारत

नई दिल्ली । यूक्रेन के मुद्दे पर चर्चा शुरू करने को लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में हुई वोटिंग से भारत ने अनुपस्थित रह कर एक बार फिर साफ कर दिया है कि वह अपने कूटनीतिक हितों पर दो टूक फैसला करता रहेगा। वोटिंग से भारत के अनुपस्थित होने को एक तरह से रूस के साथ उसके रणनीतिक रिश्तों से जोड़ कर देखा जा रहा है। इससे अमेरिका के साथ भारत के रिश्तों पर छाया पड़ने की संभावना भी जताई जा रही है। भारत ने यह फैसला तब किया है, जब रूस ने अपने उप विदेश मंत्री एसवी वर्शिनिन को नई दिल्ली भेजा हुआ है। सोमवार को वर्शिनिन की विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला व सचिव (पश्चिम) रीनत संधु से अलग-अलग मुलाकात भी हुई है। यूएनएससी में सोमवार को यूक्रेन सीमा विवाद पर चर्चा का प्रस्ताव था। इसे रोकने के लिए रूस की तरफ से वोटिंग करवाया गया था। रूस के अलावा चीन की तरफ से प्रस्तावित चर्चा का विरोध किया गया।सनद रहे कि यूक्रेन की सीमा पर रूस की तरफ से तकरीबन एक लाख सैनिक और बड़ी संख्या में हथियार तैनात किए जाने के बाद पश्चिमी देशों के साथ विवाद काफी बढ़ गया है।` देशों की तरफ से यूक्रेन की मदद के लिए सैनिक व दूसरी युद्ध सामग्रियों को भेजने का काम भी हो रहा है। यह स्थिति भारतीय कूटनीति की भी परीक्षा की घड़ी है। एक तरफ उसे रूस जैसे पुराने सहयोगी देश के साथ रिश्तों को देखना है और दूसरी तरफ नए रणनीतिक साझेदार देशों अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन के साथ हितों को भी देखना है। रूस सरकार यूक्रेन विवाद को लेकर लगातार भारत के साथ संपर्क में है। अमेरिका रूस पर ज्यादा कठोर प्रतिबंध लगाने की तैयारी में है, जिसका भी असर भारत पर पड़ेगा भारत, गैबन और केन्या ने मतदान प्रक्रिया में हिस्सा नहीं लिया। शेष सभी 10 सदस्यों ने यूक्रेन सीमा विवाद पर चर्चा का समर्थन किया। इसलिए भारत की तरफ से वोटिंग में हिस्सा नहीं लेने का कोई असर नहीं हुआ। बाद में रूस ने बैठक के प्रस्ताव का विरोध करने वाले (चीन) और दूसरे अनुपस्थित देशों को धन्यवाद दिया।

उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों के विधानसभा चुनाव को लेकर प्रत्याशीयों का बयान

लखनऊ- कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला का बयान, भाजपा भगाओ,महंगाई हटाओ- सुरजेवाला, महंगाई के मुद्दे पर बोल रहे हैं सुरजेवाला, महंगाई के लिए भाजपा जिम्मेदार- सुरजेवाला, सुरजेवाला ने मंहगाई पर स्वेत पत्र किया जारी, चुनाव में कब्रिस्तान,श्मशान की बात हो रही-सुरजेवाला, चुनाव में विभाजन की कोशिश हो रही है- सुरजेवाला, नमक की सौगंध खाकर आए थे नमक महंगा हुआ, लोगों की
लखनऊ- सुभासपा ने 5 प्रत्याशियों की सूची जारी की, जहूराबाद से ओम प्रकाश राजभर चुनाव लड़ेंगे, एँएझ् के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं ओम प्रकाश राजभर, शिवपुर सीट से अरविंद राजभर चुनाव लड़ेंगे, संडीला से सुनील अर्कवंशी,बलहां से ललिता हरेंद्र पासवान, मिश्रिख से मनोज कुमार राजवंशी प्रत्याशी घोषित।
लखनऊ- कांग्रेस ने 6 प्रत्याशियों की सूची जारी की, पुरवा से उरूषा राणा को कांग्रेस का टिकट, मुनव्वर राणा की बेटी को कांग्रेस ने टिकट दिया, लखनऊ पश्चिम से सहाना सिद्दीकी को टिकट, लखनऊ उत्तर से अजय श्रीवास्तव को प्रत्याशी बनाया, लखनऊ पूर्वी से पंकज तिवारी,लंभुआ से विनय विक्रम सिंह, कल्याणपुर से गायत्री तिवारी को कांग्रेस का टिकट।
लखनऊ- 5वें चरण के चुनाव के लिए कल से नामांकन, 12 जिलों की 61 विधानसभा सीटों पर नामांकन, प्रत्याशी को सुविधा वेब पोर्टल से सकेंगे नामांकन, नामांकन में जुलूस की नहीं होगी कोई अनुमति।
लखनऊ- पूर्व मंत्री शिव कुमार बेरिया का बयान,ँ्झ् में शामिल होकर बोले शिव कुमार बेरिया, सपा में पुराने नेता फिट नहीं हो रहे- बेरिया, सपा को बाहुबली,पैसे वालों की जरूरत- बेरिया।
आजमगढ़- नकल माफियाओं के गैंग पर कार्रवाई मामला, नकल माफियाओं पर लगेगा गैंगेस्टर- एसपी, कुछ और नाम प्रकाश में आए हैं- एसपी, अ्ध्ए कार्यालय का बाबू बबलू राय निलंबित-एसपी, डीएम ने अ्ध्ए के खिलाफ लिखा है पत्र-एसपी, चुनाव आयोग, शासन को लिखा है पत्र-एसपी, बाबू समेत 22 को पुलिस ने किया था गिरफ्तार, कई कालेजों के प्रबंधक,नकल माफिया गिरफ्तार, 2 लाख 70 हजार की नकदी बरामद हुई थी-एसपी, 48 लाख 50 हजार का चेक हुआ था बरामद-एसपी।
चंदौली- लग्जरी कार से 8 पेटी अवैध शराब बरामद, सचिवालय पास लगी गाड़ी को पुलिस ने पकड़ा, पकड़ा गया आरोपी राहुल छपरा बिहार का है निवासी, आरोपी ने पुलिस से बचने के लिए लगाया फर्जी पास, बरठी कमरौर के पास नेशनल हाइवे 2 से पकड़ा।
रायबरेली- डीआईओएस ऑफिस में जमकर हुई मारपीट, अ्ध्ए और कर्मी के बीच मारपीट का आरोप, दोनों ने एक दूसरे पर लगाया पीटने का आरोप, जमकर हुई मारपीट में दो लोग गंभीर घायल, शहर क्षेत्र के डीआईओएस ऑफिस की घटना।

सपा सरकार आने पर सेक्टरों की सारी समस्याओं का होगा समाधान : प्रीति चौधरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा समाजवादी पार्टी गठबंधन के प्रत्याशी सुनील चौधरी नोएडा में समाजवादी पार्टी की लहर है भारी बहुमत के साथ समाजवादी पार्टी की सरकार बनने जा रही है सेक्टरों का जो भी विकास जो रुक

की धर्मपतने प्रीति चौधरी ने सपा महानगर महासचिव शंभू प्रसाद पोखरियाल व उपाध्यक्ष दिलबर सिंह रावत सचिव कुलदीप शर्मा मंडल अध्यक्ष जगदंबा प्रसाद रतूड़ी व अन्य साथियों के साथ सेक्टर 22 के घर घर जाकर लोगों को समाजवादी पार्टी के पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित किया प्रीति चौधरी ने कहा कि पूरे प्रदेश में व सा गया था सरकार आने पर सारे विकास कार्य पूरे किए जाएंगे लोगों के सारी समस्याओं का समाधान किया जाएगा महासचिव शंभू प्रसाद पोखरियाल ने कहा कि इस बार सपा प्रत्याशी सुनील चौधरी भारी अंतर से नोएडा से जीतने जा रहे हैं और लोगों के हर उम्मीद को जीतने के बाद पूरा करने का काम करेंगे।

प्रीति चौधरी एवं सपा कार्यकर्ताओं ने घर घर मांगे वोट

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा समाजवादी पार्टी प्रत्याशी सुनील चौधरी के पक्ष में सपा कार्यकर्ताओं ने अलग अलग जगह घर घर वोट मांगे। बरौला

गांव में सपा ग्रामीण उपाध्यक्ष मुकेश प्रधान के संयोजन में बाल्मीकि समाज की एक बैठक हुई जिसमें सुनील चौधरी की पतने प्रीति चौधरी मौजूद रहीं उन्होंने सभी से वोट देने की अपील की । बाल्मीकि समाज के प्रमुख लोगों ने सुनील चौधरी को जिताने का पूरा भरोसा दिया। इसके बाद प्रीति चौधरी ने घर घर जाकर वोट मांगे। नोएडा ग्रामीण के महासचिव एवं प्रवक्ता राघवेंद्र दुबे के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की टीम ने सेक्टर 22 मार्केट में वोट मांगे। इस दौरान लोगों का भरपूर समर्थन मिला इस अवसर पर राघवेंद्र दुबे ने कहा कि नोएडा में भाजपा सरकार ने पांच साल में एक भी काम नहीं किया इसलिए जनता ने भाजपा को हराने का मन बना लिया है। सपा सरकार में एलिवेटेड रोड, अंडर पास, मेट्रो का संचालन , होशियार पुर गांव में कन्या इंटर कॉलेज, सफीाबाद गांव में मिनी स्टेडियम, शिल्प हाट, नारी निकेतन, सेक्टर 39 में हॉस्पिटल बनाने जैसे तमाम ऐतिहासिक कार्य किये इसलिए जनता ने सपा सरकार बनाने का मन बना लिया है। उत्तरप्रदेश से भाजपा का सूपड़ा साफ होने जा रहा है। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता चौधरी जय करण, उपाध्यक्ष बबलू चौहान, व्यापार सभा अध्यक्ष मनोज गोयल, मज़दूरसभा अध्यक्ष अर्जुन प्रजापति, रविन्द्र पतवाड़ी, धर्मेंद्र बाल्मीकि सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

हज कमेटी ने सालाना हज यात्रा के लिए आवेदन करने की आखिरी तारीख बढ़ाई, जानें क्या हैं नियम

नई दिल्ली। हज कमेटी ने सालाना हज यात्रा के लिए अपने आवेदन की तारीख को बढ़ा दिया है।? इस बात की जानकारी हज कमेटी आफ इंडिया ने 30 जनवरी को दी। कमेटी ने एक सर्कुलर में कहा कि 'इच्छुक तीथ्र्यात्रियों द्वारा

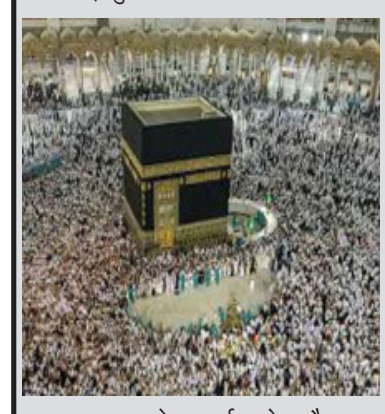

आनलाइन हज आवेदन फार्म भरने की अंतिम तिथि 15 फरवरी, 2022 तक बढ़ा दी गई है।' हज कमेटी ने 30 जनवरी को जारी किए एक सर्कुलर में कहा गया कि आवेदन फार्म भरने की अंतिम तारीख से पहले हज जाने वाले सभी यात्री जल्द से जल्द अपने दस्तावेज जमा करवा दें। क्योंकि 15 फरवरी, 2022 को या उससे पहले जारी किए गए मशीन पठनीय वैध भारतीय अंतर्राष्ट्रीय पासपोर्ट और 31 दिसंबर, 2022 तक वैध होने वाले आवेदक ही हज यात्रा 2022 के लिए आवेदन करने के पात्र होंगे। आपको बता दें कि कई राज्य हज समितियों से मिले आवेदनों को देखते हुए, आवेदन भरने की अंतिम तिथि को 15 फरवरी तक बढ़ा दिया गया है। बता दें कि इस बार कोरोना वायरस के चलते हज यात्रा के लिए केव्वल 10 इम्बार्केशन प्वाइंट्स बनाए गए है, जिसमें दिल्ली, गुवाहटी, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, अहमदाबाद, बेंगलुरु, कोच्चि और श्रीनगर शामिल है। हज यात्रा करने वाले सभी यात्रियों के कोरोना वैक्सीन की दोनों खुराक लेना अनिवार्य होगा। यात्रा के दौरान कोविड-19 प्रोटोकाल फालो किया जाएगा

बालाजी धाम पर विशाल भंडारे का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा सेक्टर 135 बाला जी धाम मे विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है । श्री बाला जी धाम के पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर मुकेशानंद जी महाराज के द्वारा किया जा रहा है । महाराज जी ने एक प्रेस वार्ता में बताया कि समाज के उत्थान हेतु समय समय पर ऐसे आयोजन होने से समाज मे एक नयी उर्जा का संचार होता है । कल श्री राम चरित मानस शुरू होकर 1 फरवरी को सुबह हवन आरती के पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है । कार्यक्रम के प्रवक्ता अमितेश कुमार सिंह ने बताया कि श्री बाला जी धाम एक सिद्धपीठ धाम

है।यहाँ दूर दूर से भक्त गण आते है और अपनी जो भी मनन्तें माँगते है यहाँ पूरा होता है । 1 फरवरी को सुबह हवन आरती के पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है ।आप सभी सम्मानित भक्त गण सादर आमंत्रित है ।पहुंच कर प्रसाद ग्रहण करे।

मतदाता जागरूक मंच द्वारा अधिक से अधिक मतदान करने के लिए अपील

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा जागरूक मतदाता मंच द्वारा नोएडा मे सभी मतदाताओं को

अपना मतदान करने के लिए अपील की है लोकतंत्र में मतदाता ही सर्वशक्तिमान होता है वही लोकतंत्र की शक्ति भी होती है परंतु यदि मतदाता अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करता तो लोकतंत्र की शक्ति क्षीण हो जाती है स्वाधीन भारत के इतिहास में सभी चुनावों में औसतन 50 से 60ज़् मतदाता ही अपने मत का प्रयोग करते रहे हैं जिसमें से 30, 40ज़् मतदान पाने वाले दल विजेता हो जाते हैं अर्थात जितने नागरिकों के मतों से एक दल विजेता हो जाता है वही उससे कहीं अधिक मतदाता अपने मत का प्रयोग भी नहीं करते लोकतंत्र के लिए यह अच्छा नहीं है; सभी नागरिकों द्वारा मतदान करना जितना आवश्यक है ;उतना ही मतदान से पूर्व विचार भी आवश्यक है कि वह अपने मत का चयन किस आधार पर करें? हम एवं हमारा समाज विचार करें कि हम कैसी सरकार चाहिए? 1: जनता के पैसे से घोटाले करने वालों का संरक्षण करने वाली या उसी पैसे से अच्छी सडके अस्पताल और विद्यालय बनाने वाली 2 :अपराधी गुंडे माफियाओं का संरक्षण करने वाली या उन्हें जेल की सलाखों के पीछे भेजने वाली सरकार? 3 शुक्रवार को होली पड़ने पर 10:00 बजे के बाद होली नहीं मनाना यह आदेश देने वाली सरकार या होली भारत का एक पवित्र पर्व है अतः होली खेली जाएगी यह कहने वाली सरकार? 4 :कांवड़ यात्रा में विभिनन् प्रतिबंध लगाने वाली सरकार या शिव भक्तों पर पुष्प वर्षा करने वाली? 5: दंगे करने वालों को बचाने वाली सरकार? या दंगाइयों से ही नुकसान की भरपाई वसूल करने वाली सरकार:: आइए हम स्वयं जागृत होकर अपने परिवार और अपने परिचित सभी मतदाताओं को जागृत करते हुए शत-प्रतिशत मतदान में अपना सहयोग करें मतदान की शक्ति से राष्ट्र की भक्ति करें। राष्ट्र की भक्ति मतदान की शक्ति। इस मौके पर समाजसेवी राकेश लिखी, निखिल , प्रमोद , गौरव , विपुल, गोरेलाल , रमेश चंद्र शर्मा, संजय पाण्डेय,मुकेश शुक्ल और 2 दर्जन से अधिक समाजसेवियों ने मतदाता जागरूकता का आवाहन समाज में किया।

सबको शिक्षा, सबको स्वास्थ्य अबकी बार समाजवादी सरकार : सुनील चौधरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा होशियारपुर, पृथला, वाजिदपुर, लाल फ्लैट, सेक्टर 74, सेक्टर 46, सेक्टर, सेक्टर 76 समाजवादी पार्टी नोएडा से गठबंधन के प्रत्याशी सुनील चौधरी ने सपा महानगर अध्यक्ष दीपक विग और ग्रामीण अध्यक्ष महेंद्र यादव की टीम के साथ जनसंपर्क किया। उन्हों ने आगामी चुनाव में समाजवादी पार्टी को वोट देने की अपील की। जनता से वादा किया अगर सपा सरकार बनती है तो आने वाले वक्त में जनता से किए गए सभी वादों को पूरा किया जाएगा। समाजवादी पार्टी सरकार बनने पर प्रत्येक घर को फ्री बिजली में कनेक्शन के साथ ही 300 यूनिट तक फ्री बिजली मुहैया कराई जाएगी। छात्रों के लिए लैपटॉप वितरण योजना शुरू की जाएगी। बुजुर्गों को समाजवादी पेंशन के साथ ही गरीबों को समाजवादी रसोई के माध्यम से ?10 में खाना परोसा जाएगा। गांव में रुके हुए विकास कार्यों को पूरा किया जाएगा। किसानों संबंधित मुद्दे को प्राथमिकता से रखते हुए 1 माह के भीतर ही उनका निस्तारण किया जाएगा। अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य, सबको रोजगार यही प्राथमिकता समाजवादी पार्टी की शुरुआत से रही है। सरकार बनने पर अपनी प्राथमिकताओं को आगे रखकर किया जाएगा। उन्होंने

सरकार पर भी निशाना साधा कहा कि भाजपा सरकार लोगों पर अन्याय कर रही है। धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। आज भाजपा कार्यकर्ता और नेता जनता से 5 साल में किए गए कार्यों को बनाने के बजाय धर्म जाति के नाम पर वोट मांग रहे हैं। लेकिन जनता इनके बहकावे में आने वाली नहीं है। आगामी विधानसभा चुनाव में सपा की सरकार बनना तय है। सपा सरकार बनने पर नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों की मनमानी के खिलाफ जांच की जाएगी। भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करके उन्हें जेल में डाला जाएगा।

नोएडा प्राधिकरण ने स्वच्छता कर्मियों को किया सम्मानित

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा प्राधिकरण की ओर से सोमवार को स्वच्छता भागीदारी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। प्राधिकरण की सीईओ रितु माहेश्वरी ने स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर पद्मश्री, पद्मभूषण एवं टैगोर अवार्ड से सम्मानित राम वनजी सुतार, जूरी सदस्य एवं नोफा अध्यक्ष राजीवा सिंह को सम्मानित किया। साथ ही, 95 स्वच्छताकर्मिन्यों और नायकों को प्रशस्ति पत्र व नगदी देकर सम्मानित किया गया । समारोह में सीईओ रितु माहेश्वरी ने लोगों को स्वच्छता में अधिक से अधिक भागीदारी करने की अपील की और लोगों को सफाई के प्रति जागरूक किया। वहीं, दिसंबर में हुई स्वच्छता प्रतियोगिता में सात बेहतर प्रोजेक्ट प्रस्तुत करने वालों को भी सम्मानित किया गया है। स्वच्छताकर्मिन्यों में विजय, इंदर, सत्येंद्र, मुकेश समेत 48 कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र व 3,100 रुपये नगद राशि दी गई जबकि स्वच्छता नायकों को प्रशस्ति पत्र ओर 2,100 रुपये नगद इनाम राशि दी गई।

भाजपा से कोरांव विधानसभा सीट से पहली महिला प्रत्याशी आरती कोल की एक मुलाकात

प्रयागराज। जैसे जैसे चुनाव की तारीख नजदीक आती जा रही है वैसे वैसे राजनीति की गर्माहट और बढ़ती जा रही है। कोरांव विधानसभा सीट शुरू से ही एक संवेदनशील स्थान रही है, पहाड़ी इलाके और कुछ प्रतिशत आदिवासी क्षेत्र इसके क्षेत्रफल में आता है। 2007 और 2012 में कोरांव ने हांथी यानी बसपा की सवारी की थी। आधुनिक समाचार कोरांव के जमीनी मुद्दों को लेकर आरती कोल के सामने मैदान में था, आरती कोल ने सभी सवालों के सहज और विस्तृत उत्तर दिए। आरती कोल ने बताया की वो राजनैतिक परिवार से जुड़े होने के बाद जमीनी हकीकत को नही भूली, कोरांव क्षेत्र के लिए वो कई नई सौगाते लाएंगी। आरती कोल

2007 और 2012 में राजबली जैसल कोरांव से जनता द्वारा चुने गए थे।2017 में हवा का रुख कमल की तरफ हो गया और भाजपा से राजमणि कोल भारी वोटों से विजयी रथ पर सवार हुए।2021 में कोरांव के लिए भाजपा ने पहली महिला उम्मीदवार आरती कोल को मैदान में उतारा है। आधुनिक समाचार के एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में आरती कोल ने रेडियो हेड सुधांशु शर्मा से वार्तालाप की। ने कहा की अगर जनता उन्हें चुन कर लाती है तो महिला अस्पताल,महिला विद्यालय और बाजारों में महिला शौचालय बनवाने का काम सर्वप्रथम करेंगी। कोरांव एक पहाड़ी इलाका होने की वजह से पीने के पानी की जो समस्या है उसको भी संज्ञान में लेते हुए उन्होंने पाइपलाइन लगवाने की बात कही। अब आने वाले समय में कोरांव किस के लिए नया सवेरा लेके आएगा ये तो 10 मार्च को ही पता चलेगा।

भाजपा को हराने के लिए व्यापक स्तर पर अभियान चलाएगी माकपा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)गाजियाबाद जिला कमेटी की बैठक में विधानसभा चुनाव के बारे निणय्र लिया गया कि भाजपा उम्मीदवारों को हराने के लिए व्यापक स्तर पर अभियान चलाया जायेगा। बैठक में सीपीआई(एम) जिला सचिव कामरेड बृजेश कुमार और आज इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से साहिबाबाद विधान सभा सीट पर गठबंधन के सपा प्रत्याशी अमर पाल शर्मा को जिताने के लिए हम अपनी पार्टी की ओर से पूर्ण समर्थन का एलान करते है। भाजपा शासन में मजदूरों-किसानों-महिलाओं-नौजवानों- अल्पसंख्यकों-दलितों का उत्पीड़न बढ़ा है तथा जनता की समस्याएं ज्यों की त्यों

प्रीति चौधरी ने सेक्टर 19 और 20 में जोरदार प्रचार किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा समाज वादी पार्टी के प्रत्याशी सुनील चौधरी की पतने श्रीमती प्रीति चौधरी ने आज सेक्टर 19 एवं 20 मे जोरदार प्रचार-प्रसार किया । प्रचार का मुख्य नेतृत्व शम्भू प्रशाद पोखरियाल महासचिव नोएडा महानगर का चल रहा है। श्रीमती चौधरी ने सेक्टर 19 और 20 में घर जा जा कर लोगों से सुनील चौधरी के लिए वोट मांगी। श्रीमती ने लोगों की समस्याओं को सुनते हुए कहा ,सुनील चौधरी के विधायक बनने पर आप लोग ही विधायक होंगे। समस्याओं को सुनने के लिए जगह-जगह चौपाल लगा करेंगी , I से सुनील चौधरी को विजय कराएं। सेक्टर 19 और 20 के लोगों ने ओर निवासी एके जैन ने भी अपना पूर्ण समर्थन सुनील चौधरी को दिया, उन्होंने कहा,सुनील चौधरी हमारा` हैं, उनकी धर्मपतने भी उत्तराखंड की है। अखिलेश यादव ने इस बार 300 यूनिट बिजली फ्री करने का निश्चय किया है ।नोएडा सचिव जितेंद्र नगर और कुलदीप शर्मा ने भी सेक्टर 20 के निवासियों से हाथ जोड़कर सुनील चौधरी के लिए मत देने की प्रार्थना की उन्होंने कहा सुनील चौधरी पिछले 20 ँ मिलते हैं। अब नोएडा का भावी विधायक सुनील चौधरी है ।साथ में उपस्थित रहे , सचिव,हीरा सिंह नेगी, उर्मिला चौधरी विधानसभा अध्यक्ष, जगदंबा प्रसाद रतूड़ी (मंडल अध्यक्ष) , एडवोकेट तरुण अवाना और उनकी टीम,अशोक, संतोष शर्मा, , राम सहेली,मोहित,एके जैन, शैलेंद्र, मुकेश, बबलू तिवारी बबली सिंह, अशोक भूपेंद्र सिंह, आकाश , निहार, माहिर सीमा युवराज, आशा प्रीति, पप्पू भैया, नितिन दुबे।

सिंह चौहान ने बताया कि पार्टी की उत्तर प्रदेश कमेटी की साफ समझ है कि जहां वामपंथी पाटिर्यों के उम्मीदवार मैदान में नहीं है उन सीटों पर भाजपा को रखने वाले उम्मीदवारों का पार्टी समर्थन कर उन्हें जिताने में सहयोग करेगी, और इस संबंध व्यापक विचार विमर्श के बाद जनपद गाजियाबाद की पांचो सीट पर समाजवादी पार्टी-राष्ट्रीय लोकदल गठबंधन के प्रत्याशियों को समर्थन करने का फैसला लिया है। बनी हुई है, आज की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान गठबंधन के सपा प्रत्याशी अमर पाल शर्मा,सीपीआईएम साहिबाबाद लोकल कमेटी के सचिव ईश्वर त्यागी, जिला कमेटी सदस्य कामरेड जे पी शुक्ला, नीरु सिंह, जीएस तिवारी, ब्रम्हजीत सिंह, रविंदर कुमार, देवेंद्र शर्मा , दर्शनी देवी, संजय शर्मा, जय कुमार, विशाल भटनागर, अनिल पाण्डेय, मदन लाल, धर्मेंद्र यादव आदि नेता कार्यकर्ता शामिल थे।

Bigg Bos 16 को होस्ट करने के लिए सलमान खान ने रखी इतनी बड़ी शर्त, सुनकर उड़ जाएंगे मेकर्स के होश

नई दिल्ली। : टीवी पर आने वाला सलमान खान होस्टेड कंट्रोविसियल शो बिग बॉस हमेशा ही से ही दर्शकों का पसंदीदा शो रहा है। इस शो में दर्शकों को फुल एंटरनमेंट देखने को मिलता है। इसी क्रम में 'बिग बॉस 15' का सफर भी बेहद ही शानदार तरीके से खत्म हुआ। इस सीजन की ट्रॉफी टीवी एक्ट्रेस तेजस्वी प्रकाश (ऊर्रैग् ईैं्) ने अपने नाम कर ली है। वहीं प्रतीक सहजपाल (ईैंव् र्एर्र्ज्) इस शो के फर्स्ट रनरअप रहे हैं। 'बिग बॉस 15' खत्म होने के बाद अब दर्शकों को अब इसके अगले सीजन यानी 'बिग बॉस 16' (ुॅदे 16) का बेसब्री से इंतजार है। वहीं इसी बीच सलमान ने 'बिग बॉस 16' को होस्ट करने के लिए के लिए एक ऐसी शर्त रख दी है जिसे सुनकर शो के मेकर्स के होश उड़ सकते हैं। दीपिका पादुकोण हाल ही में 'बिग बॉस 15' के फिनाले के दौरान अपनी अपकमिंग ?फिल्म 'गहराइयां' की

पूरी टीम यानी धैर्य कारवा, अनन्या पांडे और सिद्धांत चतुर्वेदी के साथ पहुंची थीं। इस दौरान सभी ने काफी मस्ती की और एक-दूसरे से मजकर सवाल-जवाब किए। इस दौरान दीपिका ने सलमान से पूछा, ' क्या वो बिग बॉस 16 होस्ट करेंगे या नहीं?' इस पर सलमान खान ने मस्ती भरे अंदाज में कहा, 'इस शो को वो तभी होस्ट करेंगे जब मेकर्स उनकी फीस बढ़ाएंगे। वरना नहीं करेंगे।' ये सुनते ही वहां मौजूद हर कोई हंसने लगा। इसी बता से मान लिया जाता है कि वह यकीनन अगला सीजन होस्ट करेंगे। वहीं दीपिका पादुकोण ने सलमान खान की चुटकी लेते हुए कहा, 'अगर आप नहीं करेंगे तो आपको सिद्धांत चतुर्वेदी को किस करना होगा'। जिसे सुनकर सलमान ने तुरंत अपना बयान बदल दिया और कहा कि, 'फ्री में बिग बॉस मंजूर है लेकिन सिद्धांत नहीं होएगा'। इन सभी ने मंच पर खूब मस्ती की। इस दौरान का वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है।

52 साल की उम्र में सलमान खान की एक्ट्रेस ने दिखाया अपना बोल्ड अंदाज, मोनोकनी पहन स्विमिंग पूल में उतरीं भाग्यश्री

नई दिल्ली। बॉलीवुड की खूबसूरत अदाकारा भाग्यश्री सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहने वाली अभिनेत्रियों में से एक हैं। वह अक्सर अपनी तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करती रहती हैं। भाग्यश्री 52 साल की हो चुकी हैं लेकिन वह आज भी अपने ग्लैमरस लुक को लेकर हमेशा चर्चा में रहती हैं। अब भाग्यश्री अपना हॉट और बोल्ड अंदाज दिखाने को लेकर सुर्खियों में है। भाग्यश्री ने सलमान खान के साथ साल 1989 में फिल्म मैंने प्यार किया से अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद वह कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। भाग्यश्री ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी एक तस्वीर शेयर की है। उनकी यह तस्वीर स्विमिंग पूल में एन्जॉय करते समय की है। इस तस्वीर में भाग्यश्री ने मोनोकनी पहनी हुई है, जिसमें उनका हॉट और बोल्ड अंदाज देखने को मिल रहा है। तस्वीर में भाग्यश्री ने ब्लैक कलर

की मोनोकनी पहनी हुई है और पूल में हंसते हुए वह पोज दे रही हैं। तस्वीर में उनका हॉट और बोल्ड अंदाज देखते ही बन रहा है। इस तस्वीर को शेयर करते हुए भाग्यश्री ने खास कैप्शन भी लिखा है। उन्होंने लिखा, ठमई किनडा! मैं ट्रू पाइसन हूं, आई लव वाटर। फिर चाहे वह समंदर, बीच, नदी, पूल कहीं का भी हो। फिर चाहे वह लहरों की आवाज हो या छींटे। उसका साउंड, फील और विसुअल्स मुझे एक्साइट करते हैं। इनसे मेरा दिल खुश होता है और बॉडी को फिर से जिंदा कर मेरे दिमाग को भी शांत रखते हैं।' सोशल मीडिया पर भाग्यश्री की मोनोकनी में यह तस्वीर तेजी से वायरल हो रही है। अभिनेत्री के फैंस उनकी तस्वीर को खूब पसंद कर रहे हैं। साथ ही कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। भाग्यश्री के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह जल्द साउथ सिनेमा की फिल्म राधे श्याम में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेता प्रभास और पूजा हेगड़े मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। भाग्यश्री आखिरी बार फिल्म थलाइवी में नजर आई थीं। यह फिल्म साउथ सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री और तमिलनाडू की पूर्व मुख्यमंत्री जे जयललिता की बायोपिक है।

करण कुंद्रा के बिग बॉस 15 का विजेता न बनने पर उर्फी जावेद ने उड़ाया मजाक कहा- 'कौन हैं ये लोग, कहां से आते हैं'

नई दिल्ली। रियलिटी शो बिग बॉस 15 खत्म हो गया है और इस शो के तेजस्वी प्रकाश के तौर पर विजेता मिल गया है। उनके साथ प्रतीक सहजपाल पहले रनर-अप रहे थे। वहीं करण कुंद्रा तीसरे नंबर पर रहे थे, लेकिन बहुत से दर्शकों और फैंस को था कि करण कुंद्रा जीतेंगे और ट्रॉफी अपने नाम करेंगे। इस पर अभिनेत्री ने मजाक उड़ाते हुए कहा, 'कौन हैं ये लोग और कौन हैं वो जो उम्मीद कर रहे थे कि करण जीतेंगे ? कहां से आते हैं ये लोग ? मैं हमेशा से प्रतीक सहजपाल को विजेता के तौर पर देती हूं।'इ` बातचीत करते हुए

उम्मीद थी कि करण कुंद्रा बिग बॉस 15 के विजेता बनेंगे। ऐसे में उन्हें विजेता समझने वालों का टीवी अभिनेत्री उर्फी जावेद ने मजाक उड़ाया ह उर्फी जावेद बिग बॉस ओटीटी की हिस्सा रह चुकी हैं। इस शो में उनके साथ प्रतीक सहजपाल और शिल्पा शेट्टी भी थीं। उर्फी जावेद हाल ही में मुंबई में स्पॉट हुईं। इस दौरान उन्होंने बिग बॉस 15 और उसके विजेता को लेकर ढेर सारी बातें कीं। रिपोर्टर्स ने उनसे बिग बॉस 15 के विजेता को लेकर बात की। इस पर उर्फी जावेद ने कहा, मैं तेजस्वी के लिए खुश हूं, लेकिन मैं चाहती थी कि प्रतीक जीते।उ कहा कि वह अच्छा नहीं होगा अगर वह विजेता को लेकर कुछ कहेंगी तो। इस दौरान रिपोर्टर्स ने उर्फी जावेद से कहा कि कुछ दर्शकों को मानना उर्फी जावेद के एक फैन ने ऐसी हरकत की कि अभिनेत्री की हंसी ने रुकने का नाम नहीं लिया। उनके वीडियो सिलेब्रिटी फोटोग्राफर विरल भयानी ने अपने इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया। इस वीडियो में मीडिया कैमरा के लिए पोज कर रही थीं। उर्फी जावेद जैसे आगे जाने लगीं उनके पास एक शख्स आया और उनसे सेल्फी मांगी। इस वीडियो में सेल्फी मांगने वाला आदमी मुंह में गुटका नजर आ रहा था। जब उर्फी सेल्फी देने के लिए आईं तो उस व्यक्ति ने मुंह में रखा गुटका उनके सामने सड़क पर ही थूक दिया। उर्फी जावेद के सामने जब शख्स ने गुटका थूका तो पहले तो वह थोड़ी असहज हो गईं, लेकिन बाद में वह जोर-जोर से हंसने लगीं। सोशल मीडिया पर उनका यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है।

सारा अली खान ने शेयर की गुलमर्ग वेकेशन की तस्वीरें, भाई इब्राहिम के साथ स्नोमोबाइल पर आईं नजर

नई दिल्ली,। सारा अली खान बॉलीवुड की उन अभिनेत्रियों में से है जो सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। सारा फैंस के साथ फिल्मों के अलावा अपने पर्सनल लाइफ की अपडेट भी साझा करती रहती हैं। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपनी कुछ और तस्वीरें शेयर की है। जिनमें उनके भाई इब्राहिम अली खान भी नजर आ रहे हैं। तस्वीरों में सारा एडवेंचर करते हुए दिख रही हैं। उनकी ये तस्वीरें इंटरनेट पर खूब वायरल हो रही हैं। दरअसल, बोर्डिंग करती दिख रही हैं तो वहीं कुछ में वह बर्फ की चादर से ढकी गुलमर्ग की पहीडि़यों पर बैठी नजर आ रही हैं। फोटोज में सारा और इब्राहिम की क्यूट सी भाई बहन वाली केमिस्ट्री भी देखने को मिल रही है। लोगों को सारा की ये तस्वीरें खूब पसंद आ रही है और जमकर कमेंट्स व लाइक्स मिल रहे हैं।ब खान कुछ दिनों पहले लक्ष्मण उतेकर की फिल्म की शूटिंग के लिए इंदौर में थी और वहां से भी अपनी कई तस्वीरें

सारा अली खान को वेकेशन पर जाना काफी पसंद है। शूटिंग से जैसे ही उन्हें फुर्सत मिलती है, वह घूमने-फिरने निकल जाती हैं। इस वक्त सारा कश्मीर की वादियों का लुत्फ उठा रही हैं। जिसकी कुछ तस्वीरें उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर की है। फोटोज में सारा के साथ उनके भाई के अलावा उनके फ्रेड्ज भी नजर आ रहे हैं। कुछ तस्वीरों में सारा सने जेट स्की और सने साझा करती रहती थीं। जिनमें उनकी कई तस्वीरें महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग और ओंकारेश्वर मंदिर की थी। इसके अलावा सारा ने नर्मदा नदी के किनारे बैठी अपनी कुछ तस्वीरें भी साझा की थी। वक्र फ्रंट की बात करें तो सारा जल्द ही फिल्म लुका छुपी 2 में दिखेंगी। आखिरी बार सारा आनंद एल राय की फिल्म 'अतरंगी रे' में अक्षय कुमार और धानुष के साथ नजर आई थीं।

संजीदा शेख ने बिकिनी पहन शीशे के सामने बनाया अपना बोल्ड वीडियो, देखकर यूजर ने कहा, 'अल्लाह का डर नहीं है क्या

नई दिल्ली। ऐंहर्री एपग्व् ॅदत् न्नदः टीवी एक्ट्रेस संजीदा शेख हर दिन अपनी हॉटनेस से इंटरनेट पर आग लगाती नजर आ रही हैं। संजीदा इन दिनों सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं। वह इंडस्ट्री में अपनी बोल्ड पर्सनालिटी के लिए ?जानी जाती हैं। अक्सर ही संजीदा फैंस के बीच अपनी हॉट एंड बोल्ड नजर आ रही हैं। संजीदा ने इस ब्रालेट के साथ मैचिंग स्कर्ट पहनी है। इस दौरान वह शीशे के सामने मोबाइल से अपना बोल्ड वीडियो बनाती दिख रही हैं। वहीं उनके बाल ओपन हैं। आप देख सकते हैं कि हमेशा की तरह ही संजीदा का लुक काफी सिजलिंग नजर आ रहा है। इस वीडियो को फैंस को काफी पसंद कर रहे हैं। इस पर लगातार फैंस के रिएक्शन आ रहे हैं। जहां कई लोगों को संजीदा का ये बोल्ड अवतार पसंद आ रहा है तो कई उनपर भड़कते दिख रहे हैं। इस पर कुछ यूजर्स उन्हें अल्लाह से डरने की बात कह रहे है तो कुछ ने उनके इस लुक से इंटरनेट पर आग

तस्वीरें और वीडियोज पोस्ट कर फैंस के दिलों की धड़कनें बढ़ाती रहती हैं। वहीं फैंस को भी संजीदा के लेटेस्ट पोस्ट का बेसब्री से इंतजार रहता है। इसी बीच संजीदा ने अपने एक बेहद बोल्ड वीडियो से इंटरनेट पर आग लगा दी है। इस तस्वीर को देखकर फैंस हैरान हो रहे हैं। संजीदा का ये वीडियो इंटरनेट पर ताबड़तोड़ वायरल हो रहा है। यहों देखें तस्वीर.. एक्ट्रेस संजीदा शेख ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपना एक लेटेस्ट बोल्ड वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में वह मिरर के सामने ब्लैक बिकिनी ब्रालेट पहने लगाने की बात कह रहे हैं। हः रलेब्ध्ठिन्आपको बता दें कि हाल ही में संजीदा शेख ने अपने इंस्टाग्राम पर अपनी एक लेटेस्ट बोल्ड तस्वीर शेयर की थी। इस तस्वीर में वह एक बार फैंस को अपनी फिर से बोल्ड अदाएं दिखाती नजर आई थीं। तस्वीर में आप देख सकते हैं कि संजीदा जमीन की पर लेटी हुई हैं। वहीं इस दौरान उन्होंने ब्लैक कलर की ब्रालेट के साथ कलरफुल पजामा पहना हुआ है। वहीं आप देख सकते हैं के उनके पोज देने का अंदाज बेहद ही बोल्ड है। एक्ट्रेस की इस तस्वीर को फैंस ने काफी पसंद किया है।

मुश्किलों में आए बिग बॉस 13 के 'हिंदुस्तानी भाऊ', इस मामले में पुलिस ने किया गिरफ्तार

नई दिल्ली,। मुंबई में स्कूली छात्रों का महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री प्रो वर्षा एकनाथ गायकवाड़ के घर के पास विरोध प्रदर्शन जारी है। कोरोना महामारी के बीच छात्रों का मांग है कि उनकी 10वीं और 12वीं क्लास की परीक्षा ऑनलाइन करवाई जाए। वहीं इस मामले में महाराष्ट्र पुलिस ने सोशल मीडिया इंफ्लेंसर और बिग बॉस 13 के कंटेस्टेंट विकास फाटक को महामारी के बीच दसवीं और बारहवीं कक्षा की ऑफ लाइन परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर सैंकड़ों छात्रों ने सोमवार को मुंबई में महाराष्ट्र की स्कूली शिक्षा मंत्री वर्षा गायकवाड़ के घर के पास विरोध प्रदर्शन किया। एक अधिकारी ने कहा कि विरोध धारावी के अशोक मिल नाका में हुआ और पुलिस को उन्हें मंत्री के घर की ओर जाने से रोकने के लिए हल्का लाठीचार्ज करना पड़ा। पुलिस अधिकारी ने कहा कि इंटरनेट मीडिया पर शेयर की गई जानकारी के आधार पर महानगर के अलावा ठाणे और नासिक जैसे क्षेत्रों से एकत्र हुए छात्रों को विरोध की अनुमति नहीं थी। उन्होंने कहाकि लाठीचार्ज में कोई छात्र घायल नहीं हुआ। उनमें से कुछ

गिरफ्तार कर लिया। विकास फाटक 'हिंदुस्तानी भाऊ' के नाम से मशहूर हैं। न्यूज एजेंसी एएनआई की खबर के अनुसार सोमवार को 'हिंदुस्तानी भाऊ' को धारावी पुलिस ने छात्रों के प्रदर्शन में शामिल होने पर गिरफ्तार किया है। उनके और अन्य के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज की गई है। गौरतलब है कि 10वीं और 12वीं क्लास के छात्र काफी समय से ऑनलाइन परीक्षा करने की मांग कर रहे हैं। इस पूरे मामले में सोमवार को डीसीपी प्रणय अशोक ने कहा कि हमने छात्रों को समझाने और तितर-बितर करने की कोशिश की। समाचार एजेंसी प्रेट्र के मुताबिक, कोरोना वायरस को स्थानीय पुलिस थाने लाया गया और इसके तुरंत बाद रिहा कर दिया गया। गौरतलब है कि महाराष्ट्र में राजधानी मुंबई सहित ज्यादातर शहरों में कोरोना के मामलों में पहले से काफी कमी आई है। ऐसे में सरकार ने 10वीं और 12वीं क्लास की परीक्षा ऑफ लाइन करवाना चाहती है, लेकिन स्कूली छात्र इसका कड़ा विरोध कर रहे हैं। आपको बता दें कि 'हिंदुस्तानी भाऊ' सोशल मीडिया पर काफी चर्चित हैं। वह सलमान खान के रियलिटी शो बिग बॉस के सीजन 13 का हिस्सा थे। इस सीजन में उनके साथ सिद्धार्थ शुक्ला, असिम रियाज और शहनाज गिल कंटेस्टेंट्स के तौर पर थीं।

बिग बॉस 15 खत्म होने के बाद कब करने वाले हैं तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा शादी पिता ने दिया ये हिंट

नई दिल्ली, । रियलिटी शो बिग बॉस 15 की विजेता तेजस्वी प्रकाश बनी हैं। शो में वह अपने खेल और रणनीति के अलावा अभिनेता करण कुंद्रा के साथ अपने रिलेशनशिप को लेकर भी खूब चर्चा में रही थीं। सलमान खान के शो में तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा को एक-दूसरे से प्यार हो गया था। जिसके बाद दोनों सलमान खान के शो में अक्सर साथ दिखने लगे थे। बीते दिनों बिग बॉस 15 के घर में तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा के परिवार वाले भी आए थे। परिवार ने भी इन दोनों के रिश्ते को अपनी रजामंदी दे दी थी। अब करण कुंद्रा के पिता एसपी कुंद्रा ने बताया है कि वह कब तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा की शादी करने वाले हैं। बिग बॉस 15 का ग्रैंड फिनाले खत्म होने के बाद एसपी कुंद्रा मीडिया से मुखातिब हुए है। इस दौरान उन्होंने बेटे करण के खेल को लेकर ढेर सारी बातें कीं और उनकी शादी को लेकर भी बड़ी बात की। एसपी कुंद्रा ने कहा है कि वह जल्द ही तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा की शादी करवाने की प्लानिंग कर रहे हैं। वीडियो प्दस दत्त्ल् नाम के यूट्यूब चैनल पर शेयर किया गया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि करण के पिता एसपी कुंद्रा अपनी पतनी के साथ कार में बैठे होते हैं और मीडिया के सवालों का जवाब दे रहे हैं।

फरवरी में इन वेब सीरीज और फिल्मों से बढ़ेगा OTT का तापमान, हर हफते एक धमाकेदार डेब्यू

नई दिल्ली,। दिसम्बर के अंतिम दिनों में कोरोना वायरस पैनडेमिक की तीसरी लहर की आशंका के बाद शिथिल पड़ी फिल्म इंडस्ट्री एक बार फिर तेजी पकड़ रही है और वायरस के घटते असर को देखते हुए फिल्मों की थिएट्रिकल रिलीज जोर पकड़ रही है। वहीं, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर भी बॉलीवुड फिल्मों के रिलीज होने का सिलसिला बदस्तूर जारी है। फरवरी का महीना कई मायनों में खास रहने वाला है, क्योंकि इस महीने बॉलीवुड की धक-धक गर्ल माधुरी दीक्षित और डिस्को डांसर मिथुन चक्रवर्ती का ओटीटी डेब्यू होने जा रहा है। वहीं, दीपिका पादुकोण की भी पहली फिल्म सीधे ओटीटी पर रिलीज हो रही है। चलिए, आपको विस्तार से बताते हैं, कहां क्या आने वाला है। फरवरी के पहले शुक्रवार यानी चार फरवरी को सिनेमाघरों में तो कोई नई फिल्म रिलीज होने वाली नहीं है। अलबत्ता ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर जरूर धमाल मचा हुआ है। 4 फरवरी को नेटफ्लिक्स पर तापसी पन्नू और ताहिर राज भसीन की फिल्म लूप-लपेटा रिलीज हो रही है, जो साल 1998 में आई जर्मन फिल्म रन लोला रन का आधिकारिक रीमेक है। आकाश भाटिया निर्देशित यह रीमेक पहले सिनेमाघरों में आने वाली थी, मगर हालात के मद्देनजर इसे नेटफ्लिक्स पर उतारा जा रहा है। 2020 की फरवरी में आयी थप्पड़ तापसी की आखिरी ,। इस बीच उनकी हसीन "। डिजनी प्लस हॉटस्टार पर थ्रिलर वेब सीरीज द ग्रेट इंडियन मर्डर रिलीज हो रही है। यह स्लमडॉग मिलियनरे फेम विकास स्वरूप के उपन्यास सिक्स सस्पेक्ट्स का अडेप्टेशन है, जिसे तिग्मांशु धूलिया ने निर्देशित किया है।

सिद्धार्थ मल्होत्रा ने भोपाल से शेयर किया रीयल 'योद्धा' लुक, देखें तस्वीर

नई दिल्ली। सिद्धार्थ मल्होत्रा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहते हैं। वो अक्सर अपनी आगामी फिल्मों से जुडे अपडेट भी फैंस के साथ शेयर करते रहते हैं। इन दिनों वो फिल्म योद्धा की शूटिंग में व्यस्त फैंस को मोटिवेट करते हुए विलियम आर्थर वार्ड का कोट्स भी लिखा है। उन्होंने लिखा, अवसर सूर्योदय की तरह होते हैं। यदि आप बहुत लंबा इंतजार करते हैं, तो आप उन्हें खो देते हैं- विलियम आर्थर वार्ड।

है। अब मंगलवार को उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर रीयल योद्धा लुक शेयर किया है। तस्वीर में अभिनेता चमके हुए सूरज के आगे खड़े होकर पोज दे रहे हैं। फोटो में उनकी बढ़ी हुई दाढ़ी भी दिख रही है, जो उनके लुक को और भी आकर्षित बना रहा है। वहीं इस तस्वीर को इंस्टाग्राम पर शेयर कर अभिनेता बता दें, सिद्धार्थ मल्होत्रा इन दिनों मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में फिल्म योद्धा की शूटिंग कर रहे हैं। वहीं उन्होंने सेट से भी इंस्टाग्राम स्टोरी पर सूर्योदय की तस्वीरें साझा की है। रॉ एजेंट के किरदार में आ सकते हैं नजर ये फिल्म भारत द्वारा पाकिस्तान पर की गई सबसे बड़ी महत्वपूर्ण कार्यवाही पर आधारित होगी। बतााय जा रहा है कि अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा फिल्म में रॉ के एजेंट के रूप में नजर आ सकते हैं। हालांकि अभी तक निर्माताओं द्वारा फिल्म की कहानी को लेकर कोई भी आधिकारिक जानकारी शेयर नहीं की। धर्मा प्रोडक्शंस के बैनर तले बन रही पहली एक्शन ड्रामा फिल्म का निर्देशन सागर आम्ब्रे और पुष्कर ओझा द्वारा किया जा रहा है। आपको बता दें कि इस पीरियड फिल्म में पाकिस्तान पर किए भारत के सबसे साहसी मिशन की कहानी को दिखाया जाएगा। सिद्धार्थ मल्होत्रा, दिशा पाटनी और राशी खनन अभिनीत ये फिल्म अगले साल 11 नबंवर, 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। आपको बता दें कि सिद्धार्थ इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को भी लेकर काफी सुर्खियों में है। सोशल मीडिया पर अफवाहे हैं कि अभिनेता और एक्ट्रेस कियारा आडवाणी लंबे वक्त से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। दोनों को अकसर साथ में छुट्टियां मानते और टाइम बीताते हुए देखा जाता है। हालांकि दोनों ने अभी तक अपने रिश्ते को लेकर कोई भी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

कंगना रनौट ने नवाजुद्दीन सिद्दीकी की शेयर की ऐसी तस्वीर, देखकर हो जाएंगे आप भी हैरान

नई दिल्ली, । एक्ट्रेस कंगना रनोट जितना फिल्मों में अपनी अदाकारी के लिए जानी जाती हैं उतना ही रियल लाइफ में अपनी बेबाकी के लिए भी जानी जाती हैं। समाजिक मुद्दो पर अपनी बयान बाजी के कारण वह अक्सर ही कॉन्ट्रोवर्शी क्रिएट करती हैं। एक्ट्रेस सोशल मीडियो पर भी काफी एक्टिव रहती हैं। फैंस के साथ कंगना अपनी फोटोज और वीडियोज शेयर करती रहती हैं। अब उन्होंने कुछ और दो तस्वीर है। लेकिन तस्वीरों में उनका गेटअप कुछ अलग है। नवाजुद्दीन सिद्दीकी तस्वीरों में लहंगा पहने हुए नजर आ रहे हैं और उनका गेटअप लड़की का है। बैकग्राउंड में लाइट्स से जगमगाता स्टेज दिख रहा है और उनके साथ दो लड़किया भी खड़ी हैं। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए कंगना ने कैप्शन में लिखा, 'सो हॉट'। इसके साथ ही उन्होंने अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी को भी इस सटोरी में टैग किया। कंगना

तस्वीरें साझा की है। जो इंटरनेट पर खूब वायरल हो रही हैं। कंगना रनोट ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक स्टोरी शेयर की है। स्टोरी में अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी की ने बीते साल फिल्म 'टीकू वेड्स शेरू' की घोषणा की थी। जिसकी शूटिंग फिलहाल चल रही है। फिल्म कंगना के प्रोडक्शन हाउस मणिकर्णिका फिल्म्स के बैनर तले बन रही है जिसे साई कबीर द्वारा निर्देशित किया जा रहा है। हाल ही में नवाजुद्दीन ने एक आलीशान घर मुंबई में बनाया है जिसकी तस्वीरें उन्होंने सोशल मीडिया पर शेयर की थी। जिस पर क्वीन कंगना रनोट ने नवाज के घर की एक तस्वीर शेयर कर उनको बधाई दी थी।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोट:- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।